राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 2 ■ अंक 10 ■ जनवरी 2019 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 44

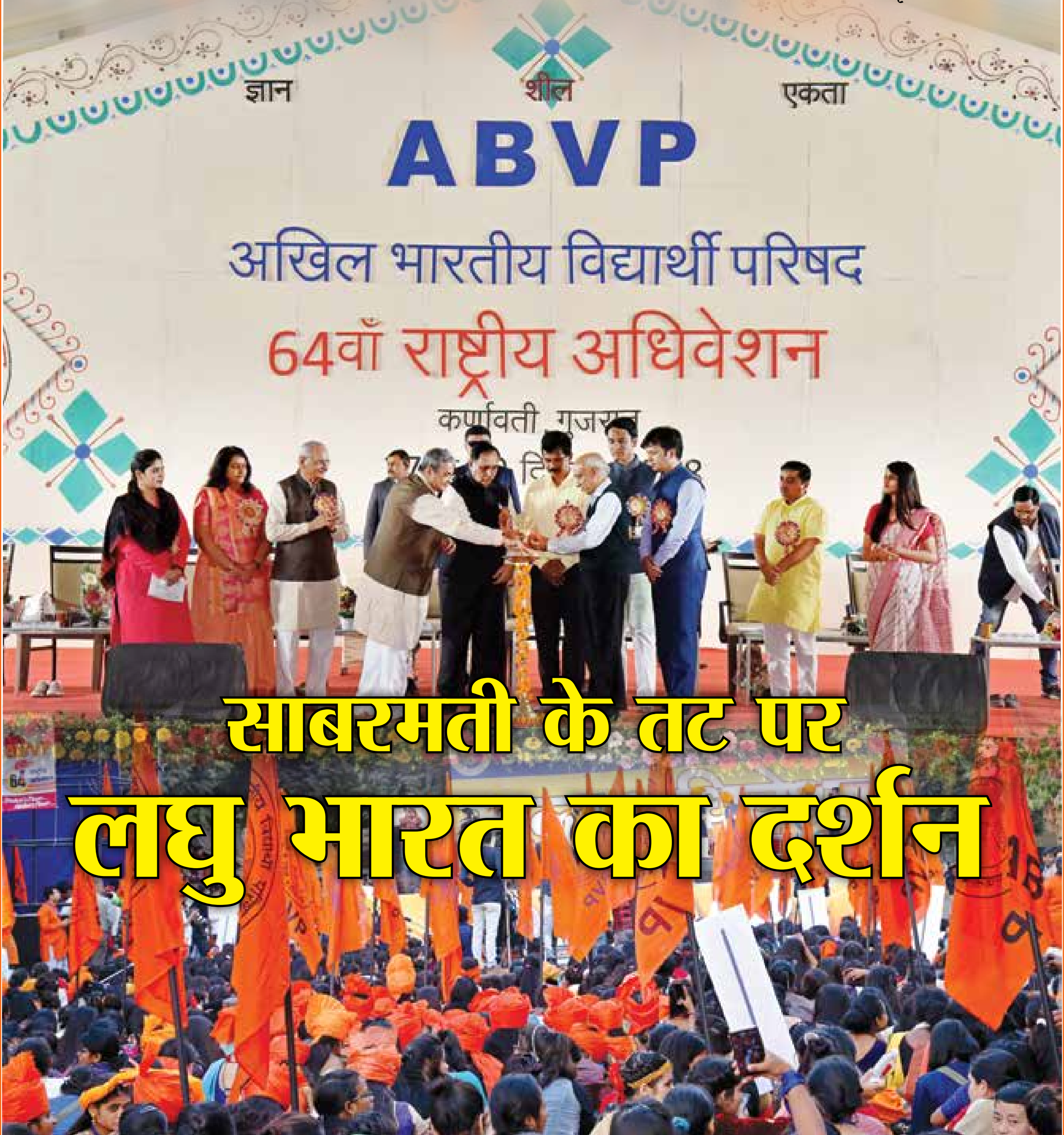

साबरमती के तट पर

लघु भारत का दर्शन

64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां

प्रदर्शनी स्थल के मध्य में स्थापित भारत माता

ध्वजारोहण करते अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एस. सुबैय्या एवं महामंत्री आशीष चौहान

अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में मंगलाचरण करते पंडितगण

शोभा यात्रा का नेतृत्व करते राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री व अन्य

खुले अधिवेशन के दौरान मंचासीन राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री एवं छात्रनेता

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देते कार्यकर्तागण

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 2, अंक 10
जनवरी, 2019

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 **साबरमती के तट पर लघु भारत का दर्शन**
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने कहा कि 1949 से लेकर अभी तक...

संपादकीय 04
स्वामी विवेकानंद के बताये रास्ते पर चलने का संकल्प 15
साक्षात्कार/आतंकवादियों से कम खतरनाक है नहीं है शहरी नक्सल: आशीष चौहान 16
DEMAND TO REFINE THE SYSTEM OF UNDER GRADUATE EDUCATION 18
उभरता भारत नई आशाएं 19
नागरिकता संशोधन विधेयक 2016 का अभाविप ने किया स्वागत 21
महात्मा गांधी की सार्धशती पर विशेष आलेख श्रृंखला – 5 22
आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग को आरक्षण देना एक महत्वपूर्ण कदम : चौहान 23
CHALLENGES AHEAD OF INDIA MOVING TOWARDS ALL ROUND DEVELOPMENT 24
सुनहरे भविष्य के लिए आज करें वोट 25
बस्ते की बोझ बिना भी शिक्षा हासिल कर सकते हैं बच्चे : संदीप जोशी 26
अभाविप एक परिवर्तनकारी यात्रा – भविष्य की दिशा 28
SUPREME COURT MUST BE CAUTIONS IN THE MATTERS OF PUBLIC FAITH 31
विद्यार्थी परिषद् के प्रशिक्षण की बदौलत मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया : उपराष्ट्रपति नायडू 32
आत्मीयता और मिठास के प्रतीक थे यशवंतराव केलकर : ओ. पी. कोहली 33
CELEBRATING DIVERSITY 34
NEED OF ERADICATING MAOIST PROPAGANDA IN ACADEMIA 36
महिला सम्मान हमारा स्वाभिमान 37
"THE 21ST CENTURY WOMEN'S ISSUES SHAPING THE WORLD" 38
भारत गौरव यात्रा – अंतर–राज्य छात्र जीवन दर्शन 40
राष्ट्रीय पदाधिकारी : 2018 –19 41

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

गुजरात में परिषद का यह चौथा अधिवेशन था। इससे पूर्व 1973, 1983(राजकोट), और 2003 में यहाँ राष्ट्रीय अधिवेशन हो चुके हैं। राजकोट अधिवेशन को छोड़ कर शेष तीनों अधिवेशन कर्णावती (अहमदाबाद) में ही हुए हैं। हर अधिवेशन अपने-आप में अभूतपूर्व था। एक ओर व्यवस्था और साज-सज्जा की भव्यता तो दूसरी ओर संकल्प की दिव्यता अधिवेशन को अविस्मरणीय बना देती है।

यह केवल संयोग नहीं है कि गुजरात में होने वाले प्रत्येक अधिवेशन की एक पृष्ठभूमि थी और अधिवेशन में लिये गये संकल्प का फलितार्थ एक बड़े परिवर्तन के रूप में सामने आया। 1973 के अधिवेशन की पृष्ठभूमि थी भ्रष्टाचार के विरुद्ध नवनिर्माण आन्दोलन तो 1983 में गुवाहाटी सत्याग्रह। 2003 की पृष्ठभूमि में गोधरा कांड था जिसने देश को विचलित कर दिया था। तीनों ही अवसर देश की छात्रशक्ति को परिवर्तन की मशाल थामने का आह्वान कर रहे थे। परिषद ने इस आह्वान को स्वीकार किया और इन घटनाओं को लेकर देश में जनमत निर्माण करने का सफल प्रयास किया।

2019 भी देश के लिये एक ऐसा ही पड़ाव है। सारी राष्ट्रविरोधी शक्तियां परस्पर गठजोड़ कर देश को तोड़ने के लिये कमर कसे हैं। भीमा-कोरेगांव हो, शबरीमला मंदिर में निश्चित आयुवर्ग की महिलाओं के प्रवेश का मुद्दा हो अथवा राष्ट्रीय नागरिकता पंजी को असम में लागू करने का निर्णय, देश विरोधी शक्तियां एक होकर भारत विरोधी माहौल बनाती हैं और सामान्य नागरिकों को भ्रमित कर आंदोलन के लिये उकसाती हैं। यही कारण है कि उत्तर-पूर्व के मिजोरम जैसे स्थान पर भी नागरिकता पंजी के विरुद्ध प्रदर्शन हुए जहां एक भी बाँगलादेशी नहीं है।

शबरीमला मंदिर के मामले में जहां न्यायालय ने एक ऐसे समूह की याचिका पर सीमा से परे जाते हुए आस्था के क्षेत्र में हस्तक्षेप किया जिसका कोई अधिकारहनन नहीं हो रहा था। वहीं रामजन्भूमि के मुद्दे पर सत्तर साल बाद भी अंतिम निर्णय न प्राप्त कर सकने वाला देश का बहुसंख्यक समाज सर्वोच्च न्यायालय की प्राथमिकताएँ और होने जैसी टिप्पणी से स्तब्ध रह गया।

जम्मू-कश्मीर में जारी सेना और भारत विरोधी गतिविधियों से लेकर पश्चिम बंगाल में परिषद कार्यकताओं की हत्या के बाद सरकारी तंत्र के इशारे पर कोई कार्रवाई न होने की घटनाएं, जम्मू सहित देश के अनेक हिस्सों में रोहिंग्याओं के अवैध रूप से बसने और आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने और उनके समर्थन में तमाम राजनैतिक दलों के उतर आने की स्थिति देश के सामने भविष्य की एक आशंकाजनक तस्वीर प्रस्तुत करती है।

कर्णावती में सम्पन्न राष्ट्रीय अधिवेशन में इन सभी विषयों पर गहन चिंतन हुआ और भविष्य की योजनाएं निश्चित हुईं। इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के साथ ही रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के परिणाम के रूप में भारत की विकास यात्रा अबाध गति से बढ़ेगी, कार्यकर्ताओं और देश को यह विश्वास दिलाने में अधिवेशन पूरी तरह सफल रहा।

हार्दिक शुभकामना सहित,

संपादक

साबरमती के तट पर लघु भारत का दर्शन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्‌घाटन सत्र को संबोधित करते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने कहा कि 1949 से लेकर अभी तक परिषद् के कार्यकर्ताओं की कई पीढ़ियों ने राष्ट्र के लिए अपने जीवन को खपाया है। समय - समय पर अगर विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ता अपने कर्तव्य को नहीं निभाते तो शायद देश तोड़ने वाले सफल हो जाते। विद्यार्थी परिषद् ने नक्सलवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और अलगाववाद को रोकने के लिए अनेकों प्रयास किये हैं। 1971 - 72 में अभाविप ने ही भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम छेड़ी जो बाद में लोकनायक जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति के रूप में बदल गई। परिषद् के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत माता की सेवा ही जिसका लक्ष्य है उसी का नाम अभाविप है। राष्ट्र की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए परिषद् के कार्यकर्ताओं ने अनेक आंदोलन किये और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए काम किया। परिषद् ने शोषित, वंचित और पीड़ित समाज के लिए सामाजिक समरसता जैसे कार्यक्रम किये। राष्ट्र पर जब भी मुसीबत या प्राकृतिक आपदा आई, अभाविप ने आगे बढ़कर सराहनीय कार्य किये। युवाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया में आज तक जितनी भी क्रांति हुई उसमें युवाओं की महत्ती भूमिका रही। जो

लोग युवाओं को निरूद्देश्य मानते हैं उन्हें अभाविप के अधिवेशन में आकर देखना चाहिए। इस दौरान उन्होंने चार दिवसीय अधिवेशन में आये कार्यकर्ताओं को गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार को खत्म करने का संकल्प दिलाया। साथ ही देश को खंडित करने वाली शक्तियों से डटकर मुकाबला करने की बात कही। उन्होंने कहा कि आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है जब आपलोग अधिवेशन से वापस अपने - अपने घर जायेगें तो उम्मीद है इन सभी बातों का मंथन करेंगे और राष्ट्र को आगे ले जाने का प्रयास करेंगे।

अधिवेशन में पहुंचकर भावुक हुए मुख्यमंत्री

गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि 1973 के बाद एक बार फिर मैं अभाविप के अधिवेशन में आकर काफी भावुक हूं। 1973 के अधिवेशन में मैं भी आप लोगों की तरह पंडाल में बैठकर भारत माता की जय के नारे लगा रहा था और आज संयोग देखिये कि उसी अधिवेशन में मैं मुख्य अतिथि बनकर आया हूं। यह मेरे काफी भावुक पल है, सच कहूं तो अभाविप ने मुझे राष्ट्र के लिए जीना और मरना सिखाया। आज आपलोगों के बीच आकर लगता है मानों वर्षों पहले बिछड़ी अपनी मां के पास आया हूं। यहां आकर मैं एक बार फिर अपनी पुरानी स्मृतियों में खो गया हूं, मैं गुजरात का मुख्यमंत्री बाद में, पहले विद्यार्थी परिषद् का कार्यकर्ता हूं। आज जो भी हूं वह परिषद् की बदौलत हूं।

भारत को विश्व पटल पर ले जाने की जिम्मेदारी निभायें युवा : डॉ. एस. किरण कुमार

इसरो के पूर्व अध्यक्ष व पद्मश्री डॉ. एस. किरण कुमार ने कहा कि अभाविप के अधिवेशन स्थल का नाम प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई के नाम पर होने से मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। जिस समय रूस और अमेरिका प्रतिस्पर्धा कर रहे थे उस समय डॉ. विक्रम साराभाई ने रॉकेट लॉन्च किया। जब उन्होंने काम करना शुरू किया था तो उनके समक्ष काफी चुनौतियां थीं परंतु भारतीय वैज्ञानिकों के साथ मिलकर विक्रम साराभाई ने इसरो को बहुत आगे तक पहुंचाया। पहले सुपर साइक्लॉन आता था तो 15 से 20 हजार लोग अपनी जान से हाथ धो बैठते थे लेकिन वर्तमान परिदृश्य में परिस्थितियां काफी बदली हैं, लोगों को साइक्लॉन आने से पहले ही आगाह कर दिया जाता है जिस कारण जान - माल की ज्यादा क्षति नहीं होती है। उन्होंने बताया कि भारत विज्ञान के क्षेत्र में काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश को आगे ले जाने के लिए युवापीढ़ी को आगे आना चाहिए। हम लोगों ने काफी मेहनत कर विज्ञान के क्षेत्र में भारत को यहां तक पहुंचाया है। अब भारत को विश्व पटल पर सशक्त व सुरक्षित बनाने और हमलोगों के कार्यों को आगे ले जाने की जिम्मेवारी आपलोगों की है। पूरे विश्व में भारत के प्रति आम मान्यता है कि भारत में अध्यात्म का ज्यादा प्रभाव है, जबकि सच यह है कि अध्यात्म के साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी हम काफी आगे बढ़ रहे हैं।

राष्ट्र को जोड़ने वाली संस्कारी संस्कृति का नाम है अभाविप : चौहान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि अभाविप ने समाज में संवाद स्थापित किया है। परिषद् के कार्यकर्ता समाज के जिस भाग में गये वे वहीं के अंग बनकर रह गये। कई बार लोग अभाविप के बारे में पूछते हैं अभाविप क्या है? क्या काम करती है? तो मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि राष्ट्र को जोड़ने वाली संस्कारी संस्कृति का नाम अभाविप है। अभाविप का काम समाज को जोड़कर भारत के वैभव को पुनः स्थापित करना है। एक तरफ कुछ लोग भारतीय समाज के ताने - बाने को तोड़ने में लगे हैं तो वहीं दूसरी ओर परिषद् के कार्यकर्ता समाज को समरस बनाने के लिए दिन - रात लगे हैं। उन्होंने छात्रावास संपर्क अभियान व सामाजिक अनुभूति का जिक्र करते हुए कहा कि इन शिविरों के माध्यम से कार्यकर्ता समाज की प्रत्यक्ष अनुभूति कर युवाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित कर रहे हैं। बता दें कि अभाविप के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन 27 दिसंबर 2018 को इसरो के पूर्व अध्यक्ष एवं पद्मश्री ए. एस. किरण कुमार तथा गुजरात के मुख्यमंत्री विजयभाई रूपाणी ने विधिवत रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। यह अधिवेशन गुजरात के कर्णावती (अहमदाबाद) साबरमती के तट पर डॉ. विक्रम साराभाई नगर स्थित श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा सभागृह में 27 से 30 दिसंबर तक आयोजित किया गया था। अधिवेशन में देशभर के सभी प्रांतो से कुल 3714 प्रतिनिधि सहभागी हुए जिसमें 766 छात्राएं, 2686 छात्र, 258 प्राध्यापक व 33 अन्य शामिल हैं। इसके अलावा मित्र राष्ट्र नेपाल से कुल 35 अतिथि प्रतिनिधि जिसमें 10 छात्राएं शामिल हैं। इस वर्ष निकोबार से भी दो छात्र अधिवेशन में उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह में स्वागत समिति के कार्यकारी अध्यक्ष परिन्दू भगत, महामंत्री प्रदीप सिंह बाजला, स्वागत समिति के संरक्षक सुरेन्द्र काका और सुश्री बीजलबेन पटेल समेत हजारों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दस विषयों पर आयोजित किये गये थे समानांतर सत्र

अधिवेशन में शहरी माओवाद, पूर्वोत्तर में हो रहे सकारात्मक परिवर्तन, माताओं की विश्वयात्रा, वर्तमान आर्थिक परिस्थिति, श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन, डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर, महिला शिक्षा सर्वे, वैश्विक जगत में भारत और परिसरों में वैचारिक बहस पर अलग - अलग दस समानांतर सत्र आयोजित कर मंथन किया गया। 'शहरी माओवाद' पर प्रतिनिधियों के सवालों का जवाब कैप्टन स्मिता गायकवाड़ दे रहीं थीं वहीं 'पूर्वोत्तर में सकारात्मक परिवर्तन' को अभाविप के राज्य विश्वविद्यालय प्रमुख रेखांकित कर रहे थे जबकि 'माताओं की विश्वयात्रा' पर वूमेन ऑन व्हील की नेतृत्वकर्ता माधुरी सहस्त्रबुद्धे अनुभव को प्रतिनिधियों से साझा कर रहीं थीं। बता दें कि श्रीमती सहस्त्रबुद्धे के नेतृत्व में महिलाओं ने लगभग 18 देशों की यात्रा वाहन से की और विदेशों में माताओं की स्थिति को जाना। वर्तमान आर्थिक परिस्थिति पर नीति आयोग के अटल इनोवेशन सेंटर के उन्नत पंडित ने प्रतिनिधियों की जिज्ञासा का समाधान किया। सबसे ज्यादा उत्साह 'श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन' के सत्र में देखा गया, जहां पर कार्यकर्ता श्रीराम मंदिर निर्माण को काफी उत्सुक थे, उनकी आशंकाओं का जवाब अभाविप के राष्ट्रीय प्रशिक्षण एवं प्रकाशन प्रमुख मनोजकांत ने दिया। 'बाबा साहेब भीम राव आंबेडकर' सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह - संगठन मंत्री श्रीनिवास थे। वहीं 'महिला शिक्षा सर्वे' सत्र में अभाविप की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उमा श्रीवास्तव उपस्थित थीं जबकि 'वैश्विक जगत में भारत' सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह - संगठन मंत्री जी. लक्ष्मण थे जिन्होंने प्रतिनिधियों के साथ विस्तार से चर्चा की एवं परिसरों में वैचारिक बहस सत्र पर अभाविप के आयाम प्रमुख नागराज रेड्डी ने प्रतिनिधियों से उसके विचार जाने एवं उनके सवालों का जवाब दिया। ■

अधिवेशन स्थल पर लहरा रहे ध्वजों के पीछे छिपा है इतिहास

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ 28 दिसंबर को सांय 3 बजे अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या एवं राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने संयुक्त रूप से ध्वजारोहण कर किया। ध्वजारोहण होने के बाद विधिवत रूप से अधिवेशन का प्रारंभ हुआ। ध्वज स्थल पर इस बार 64 ध्वज लगे थे, 63 ध्वजों के बीचों - बीच एक अधिक ऊंचा ध्वज था जिसका आरोहण राष्ट्रीय अध्यक्ष और महामंत्री ने किया। यह ध्वज 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का प्रतीक है एवं इसके चारों और लहरा रहे 63 ध्वज अभी तक संपन्न हुए 63 अधिवेशन की संख्या दर्शा रहे थे। मुख्य ध्वज एवं उसके चारों ओर लगे ध्वजों पर अब तक 64 अधिवेशनों में रहने वाले राष्ट्रीय अध्यक्ष व राष्ट्रीय महामंत्री के नाम अंकित है तथा जिस प्रांत में जिस वर्ष अधिवेशन हुआ है उस प्रांत का मानचित्र भी अंकित है। ध्वज स्थल पर विभिन्न रंगों द्वारा सुसज्जित रंगोली ध्वज स्थल की शोभा बढ़ा रही थी। ध्वज स्थल पर माटी कला द्वारा अभाविप व अधिवेशन के लोगो को आकर्षक रंगो द्वारा संवारा गया। ध्वज स्थल के चारों ओर 64 गमले रखे हुए हैं जिनमें सुंदर व सुगंधित फूलों के पौधे लगे हैं।

कैंसर से भी घातक और लाइलाज बीमारी है शहरी नक्सल : एस. सुबैय्या

अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या ने कहा कि मैं तमिलनाडु से हूं, हिन्दी मेरी मातृभाषा नहीं है लेकिन हिन्दी मेरी मातृभूमि की भाषा है। उन्होंने कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए कहा कि परिषद् के कार्यकर्ता यमराज से भी नहीं डरते। आचार्य चाणक्य, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप जैसे महापुरूषों की विरासत हमारे पास है, हमें इस पर गर्व करना चाहिए। हमारी परंपराओं में नारियों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। श्री सुबैय्या ने महाभारत का उल्लेख करते हुए कहा कि महिलाओं के साथ ज्यादती करने वाले भाई ही क्यों न

अभाविप के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन पर प्रधानमंत्री ने भेजा शुभकामना संदेश

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 64वें राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई है। ज्ञान, शील और एकता के ध्येय के साथ चल रहे देश भर के महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं।

देश के सामाजिक व राजनीतिक बदलावों के साथ भविष्य के लिए नीति निर्माण में युवा विद्यार्थियों की राय और सहभागिता उपयोगी होती है। समस्त देशवासियों, विशेषकर युवाओं के सक्रिय योगदान से पिछले कुछ वर्षों में हमने विविध क्षेत्रों में कई गौरवपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं और विकास की राह में राष्ट्र निरंतर अग्रसर है। वर्ष 2022 में देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने तक "न्यू इंडिया" के स्वप्न को साकार करने में युवा शक्ति की भूमिका बेहद अहम सिद्ध होगी।

युवा छात्र-छात्राओं और राष्ट्रहित के विभिन्न विषयों को मुखरता से उठाने में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की भूमिका सराहनीय रही है। मुझे उम्मीद है कि अधिवेशन में बदलते दौर की चुनौतियों, देश के विकास और समाज के प्रति दायित्वों सहित अन्य विषयों पर रचनात्मक, विचारपूर्ण और फलदायी चर्चा होगी।

राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजकों एवं इसमें हिस्सा ले रहे सभी छात्र-छात्राओं को बधाई व शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
24 दिसम्बर, 2018

डॉ. एस. सुब्बैया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
3, मार्बल आर्च, सेनापती बापट मार्ग
माटुंगा रोड, माहिम, मुंबई
महाराष्ट्र- 400016

हों उसे भी बख्शा नहीं जायेगा। देश में निर्भया जैसी घटना बेहद चिंताजनक है, ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए अभाविप के द्वारा मिशन साहसी अभियान चलाया गया है। इस अभियान के तहत छात्राओं को सशक्त, सबल और निडर बनाया जा रहा है। अब बच्चियां अपनी सुरक्षा के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहेंगी। वह निडर होकर मुंहतोड़ जवाब देंगी। मिशन साहसी के तहत अभी तक लगभग सात लाख छात्रायें प्रशिक्षित हो चुकी है। इस दौरान उन्होंने एक नया नारा भी दिया - आग में चलेंगे, मौत में मिलेगें फिर भी कहेंगे वंदे मातरम! इस नारे से पूरा पंडाल वंदे मातरम से गूंज उठा। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि मैं एक चिकित्सक हूं, मैंने सैंकड़ों कैंसर मरीजों का इलाज किया है, जिनमें कईयों का इलाज सफल हुआ है लेकिन देश में एक अलग किस्म की बीमारी फैल रही है, उसका नाम है शहरी नक्सलवाद....। कैंसर का इलाज तो संभव है लेकिन शहरी नक्सल कैंसर से भी घातक और लाइलाज बीमारी है जो भारतीय समाज को अंदर से खोखला कर रही है। इनलोगों ने देश के खिलाफ साजिश रच कर दुनिया के सामने भारत की छवि को खराब करने का काम किया। जी. एन.साईंबाबा, रोमिला थापर जैसे कथित बुद्धिजीवियों ने भारत को गलत तरीके से प्रस्तुत कर लोगों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया जबकि भारत का इतिहास प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है, पिछड़े को पिछड़ा रखना भारत का नहीं बल्कि वामपंथ का इतिहास रहा है।

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा, जिनके नाम पर रखा गया अधिवेशन के मुख्य सभागार का नाम

अभाविप के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के मुख्य सभागार का नाम क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा के नाम पर रखा गया था। भारतीय क्रांतिकारी श्याम जी कृष्णवर्मा व्यवसाय से वकील और पत्रकार थे। उनका जन्म गुजरात के कच्छ जिले के मांडवी में हुआ। वह संस्कृत समेत कई अन्य भारतीय भाषाओं के ज्ञाता थे। उनके संस्कृत के भाषण से प्रभावित होकर मोनियर विलियम्स ने उन्हें ऑक्सफोर्ड में अपना सहायक बनने के लिए निमंत्रण दिया था। उन्होंने लंदन में "इंडियन होम रुल सोसायटी", "इंडिया हाउस" और "द इंडियन सोशियॉलोजिस्ट" की स्थापना की थी। इन संस्थाओं का उद्देश्य वहां रह रहे भारतीयों को देश की आजादी के बारे में जागृत करना और छात्रों के मध्य परस्पर मिलन एवं विविध विचार - विमर्श करना था। श्यामी जी ऐसे प्रथम भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम. ए और बार - एट - ला की उपाधियां मिलीं थी। स्वामी दयानंद सरस्वती की प्रेरणा से ही उन्होंने लंदन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की थी जिससे मैडम भीखाजी कामा, वीर सावरकर, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, सरदार सिंह राणा (एस. आर. राणा), लाला हरदयाल,और मदन लाल ढींगरा जैसे क्रांतिकारी जुड़े थे। 1905 में इंडियन सोशियोलॉजिस्ट नामक मासिक पत्रिका निकालना प्रारंभ किया और 18 फरवरी 1905 को इंडियन होमरुल सोसायटी की स्थापना की। इस सोसायटी का उद्देश्य भारतीयों के लिए भारतीयों के द्वारा भारत की सरकार स्थापित करना था। श्याम जी का निधन जेनेवा के एक अस्पताल में 30 मार्च 1930 को हुआ था। ब्रिटिश सरकार ने उनकी मौत की खबर को दबाने का प्रयास किया। आजादी के लगभग 55 साल बाद 22 अगस्त 2003 को श्याम जी और उनकी पत्नी की अस्थियों को जेनेवा से भारत उनके जन्म स्थान मांडवी लाया गया। उनके सम्मान में सन 2010 में मांडवी के पास 'क्रांति तीर्थ' नाम से स्मारक बनाया गया।

अधिवेशन में भी दिखा सेल्फी का उत्साह

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन स्थल पर I ❤ ABVP के नाम से सेल्फी प्वाइंट बनाया गया था। सत्र के छूटते ही प्रतिनिधि सेल्फी लेने में व्यस्त हो जाते थे, सेल्फी का जादू सिर चढ़कर बोल रहा था। अधिवेशन में आये प्रतिनिधि एक - एक पल को अपने मोबाईल के कैमरे में कैद कर लेना चाहते थे। शाम के बाद तो सेल्फी लेने वालों की भीड़ दोगुनी हो जाती थी, इसके पीछे कारण था....एक में साबरमती रिवर फ्रंट का दृश्य वहीं दूसरी ओर दुधिया रोशनी और दिल के आकार का बना सेल्फी प्वाइंट। सेल्फी प्वाइंट के बगल में ही भारत का डिजिटल

....जब व्यवस्था में लगे कार्यकर्ताओं ने प्रतिनिधि के थाली से बचे हुए जूठे को खाना शुरू कर दिया

राष्ट्रीय अधिवेशन में देश भर से हजारों की संख्या में प्रतिनिधि पहुंचते हैं, स्वाभाविक सी बात है कि इसकी तैयारी भी दो - तीन माह पहले से ही शुरू करनी पड़ती है। अधिवेशन में अरूणभाई यार्दी भोजन सभागृह में भोजन व्यवस्था के कार्यकर्ताओं ने सभी प्रतिनिधियों को उत्तम भोजन वितरण के साथ ही भोजन को व्यर्थ न करने का आह्वान किया। भोजन वितरण करने का कार्य प्रांतशः तय रहता है, प्रतिनिधि कतारबद्ध होकर भोजन लेते हैं और भोजन करने के बाद अपनी थाली को वहीं पर रखे पात्र में रख देते हैं लेकिन इस बार व्यवस्था कुछ अलग थी, थाली को रखने की व्यवस्था भोजन पंडाल के बाहर रखी गई थी जहां पर दर्जन भर से अधिक भोजन व्यवस्था के कार्यकर्ता मौजूद थे जो हरेक प्रतिनिधि को थाली से सारा भोजन खाने की अपील कर रहे थे। सब कुछ ठीक - ठाक चल रहा था इसी बीज एक अजीबोगरीब घटना घटी, जिस घटना ने प्रतिनिधियों को अंदर तक झकझोर किया। हुआ यूं कि एक प्रतिनिधि की थाली में काफी भोजन बचा हुआ था। व्यवस्था में लगे कार्यकर्ता उसे खत्म कर थाली रखने का आग्रह कर रहे थे, प्रतिनिधि ने गुस्से में कहा, मुझे जब खाने की इच्छा नहीं है तो आपलोग जोर - जबरदस्ती क्यों कर रहे हो? तभी कार्यकर्ता ने कहा आप नहीं खा सकते तो मुझे ही खिला दीजिए और उक्त कार्यकर्ता ने प्रतिनिधि की थाली से जूठे भोजन को खाना शुरू कर दिया, इसके बाद प्रतिनिधि शर्म से पानी - पानी हो गया। वे लोग एक - एक प्रतिनिधि की थाली को देख रहे थे कहीं भोजन तो बर्बाद नहीं हो रहा है। यह खबर देश भर से आये सभी प्रतिनिधियों में आग की तरह फैल गई और सभी सजग हो गये। कार्यकर्ता स्टॉल पर खुद बोल रहे थे ज्यादा भोजन मत दो, बचेगा तो किसी अन्य जरूरतमंद कार्यकर्ता की भूख मिटेगी। अधिवेशन के अंतिम दिन भोजन व्यवस्था में लगे कार्यकर्ताओं ने बताया कि इस बार हमलोगों ने अधिवेशन में लगभग 3000 थाली भोजन बचाया और प्रतिनिधियों को यह संदेश देने में सफल रहे कि एक भी कौर भोजन व्यर्थ न हो।

मानचित्र बनाया गया था, जिस पर देशभक्ति के गाने सहज रूप से सुने जा सकते थे। पल - पल रंग बदलता डिजिटल मानचित्र काफी मनोरम था। प्रवेश द्वार के सामने भारतीय एकता के प्रतीक 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का प्रतिरूप सरदार पटेल की प्रतिमा लगी थी, वहां पर भी काफी लोग तस्वीर ले रहे थे।

शोभा यात्रा

अलग भाषा, अलग वेश, फिर भी अपना एक देश

भारत माता की जय, वंदे मातरम, गांव - गांव में जाएंगे भारत भव्य बनाएंगे, कर्णावती हो या गुवाहाटी अपना देश अपनी माटी, कश्मीर से कन्याकुमारी, भारत माता एक हमारी, अलग भाषा अलग वेश फिर भी अपना एक देश, इस तरह के अनेक नारों से 28 दिसंबर को पूरा कर्णावती (अहमदाबाद) शहर गुंजायमान हो रहा था। मौका था अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन की शोभा यात्रा का। जहां देश भर से आये प्रतिभागी अपनी पारंपरिक वेशभूषा में सज-धजकर शहर में निकले थे। शोभा यात्रा का प्रारंभ साबरमती

खुला अधिवेशन

खुले अधिवेशन में छात्र नेताओं ने भरी हुंकार

राष्ट्रीय अधिवेशन के दूसरे दिन यानी 28 दिसंबर 2018 को शोभा यात्रा के पश्चात संपन्न खुले अधिवेशन में महिला सुरक्षा, सामाजिक समरसता, न्याय व्यवस्था, शिक्षा नीति, शहरी नक्सलवाद के मुद्दे पर छात्रनेताओं ने हुंकार भरी। खुले अधिवेशन में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि राष्ट्रीय एकात्मता का सच्चा पहेरदार है अभाविप। सामाजिक समरसता हमारे खून में हैं, परिषद् जाति, पंथ, क्षेत्र, भेदभाव और ऊंच - नीच के भाव को नहीं मानती है। महिला सुरक्षा के मुद्दे पर बात करते हुए हिमाचल प्रदेश की छात्रा प्रमुख हेमा ठाकुर ने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं उस संगठन की कार्यकर्ता हूं जो महिलाओं का सम्मान करना सिखाती है। जहां एक ओर देश में सभी छात्र संगठन महिला सुरक्षा की ही बात करते हैं वहीं विद्यार्थी परिषद केवल सुरक्षा की बात ही नहीं करती बल्कि मिशन साहसी जैसे कार्यक्रमों से महिलाओं को भयमुक्त करने का प्रयास करती है। शिक्षा के भारतीयकरण पर भाषण देते हुए राष्ट्रीय मन्त्री रोहित मिश्रा ने कहा कि अब बहुत पढ़ चुके गुलामी का इतिहास, पाठ्यक्रम में पढ़ेंगे गौरवशाली इतिहास। जन आस्था और न्यायालय पर अपने संबोधन में राष्ट्रीय मन्त्री निधि त्रिपाठी ने कहा कि राम हमारा स्वाभिमान है। छोटी सी चोट लगने पर मुंह से जिस राम का नाम आता उस राम के मंदिर के मुद्दे पर मौन क्यों? उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से न्यायालय द्वारा दिए जा रहे निर्णय आश्चर्यजनक हैं, जन आस्थाओं को दरकिनार कर न्यायालय द्वारा टिप्पणी दी जा रही है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण होना चाहिए। शहरी माओवाद विषय पर अपने संबोधन में राष्ट्रीय मंत्री भूपेन्द्र नाग ने कहा कि परिषद् के कार्यकर्ता जब परिसर में कार्य करते हैं तो अनेक विचारों से संघर्ष करना पड़ता है। कुछ विचार ऐसे

रिवरफ्रंट से हुआ जो विभिन्न चौक - चौराहे से होकर चार रास्ता (पंचवटी) में जाकर सभा में परिवर्तित हो गई। शोभा यात्रा में शामिल कार्यकर्ता अपने - अपने राज्य की प्रसिद्ध गीत तथा अपनी भाषा में नारे भी लगा रहे थे। कार्यकर्ता अपने - अपने प्रांत से संबंधित राष्ट्र नायकों का गुणगान कर भारत माता की जय नारे लगा रहे थे। देश भर से आए हुए प्रतिनिधियों का कर्णावती (अहमदाबाद) नगर के विभिन्न स्थानों पर स्थानीय संस्थाओं जैसे शाला संचालक मण्डल, बार काउंसिल ऑफ गुजरात, सिंधी समाज, समस्त मुस्लिम समाज और जैन समाज के साथ ही अन्य संस्थाओं ने भी स्वागत किया। स्थानीय लोगों ने भी फूल वर्षा करते हुए प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

हैं जो देश को खंडित करने की बात करते है। उन्होंने कहा कि जहां एक ओर देश की सेना निरन्तर इस देश की सुरक्षा में लगी है वहीं कुछ लोग हथियारों से नहीं अपितु बौद्धिक रूप से शहरी नक्सलवाद को फ़ैलाने का काम कर रहे हैं। बिहार के छात्र नेता सुजीत पासवान ने बांग्लादेशी घुसपैठ एवं एनआरसी के मुद्दे पर बोलते हुए कहा कि बांग्लादेश से लगभग एक करोड़ लोग गायब हुए जो घुसपैठ कर भारत में दाखिल हुए और असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड जैसे राज्यों में बस गये। सेक्यूलर राजनीतिक दलों ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए बांग्लादेशियों का राशन कार्ड तक बनवाया। एनआरसी के निर्देश पर असम में जब एनआरसी लागू किया गया तो बुद्धिजीवी हाय - तौबा मचाने लगे। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि बांग्लादेशियों पर आंसू बहाने वाले कश्मीरी पंडित पर मौन क्यों धारण कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ा आश्चर्य मुझे ममता बनर्जी के रवैये को लेकर हो रहा है जो ममता बनर्जी 2005 में बांग्लादेशी घुसपैठ का विरोध करती थीं आज उसका समर्थन क्यों कर रही है। मौके पर हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय (एचसीयू) के छात्र नेता उदय इनाल ने अपनी बात रखी और एचसीयू में विद्यार्थी परिषद् के संघर्ष से जीत तक के सफर को साझा किया। मंच पर अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.एस. सुबैय्या एवं गुजरात के छात्र नेता निखिल मेठीया भी उपस्थित थे।

अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नारायणराव भंडारी के नाम से रखा गया था प्रदर्शनी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रत्येक राष्ट्रीय अधिवेशन में एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। प्रदर्शनी में परिषद् के उल्लेखनीय कार्यों को चित्रों, समाचार पत्रों की कतरनों, विशेष कलाकृतियों के माध्यम से दर्शाया जाता है। कई ऐसी दुर्लभ तस्वीर भी होती हैं जिसे कार्यकर्ता स्मृति में सहेज कर रखना चाहता है। इस बार प्रदर्शनी को गुजरात में विद्यार्थी परिषद् के प्रारंभिक काल के कार्यकर्ता एवं अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व. नारायणराव भंडारी के नाम से रखा गया था। प्रदर्शनी में परिषद् के इतिहास, भारत की विविधता आदि को प्रदर्शित किया गया था। प्रदर्शनी में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा गया था, पंडाल के मध्य में भारत माता की एक जीवंत चित्र स्थापित किया गया था। इस बार प्रदर्शनी को प्रतिनिधियों के साथ - साथ समान्य जनता के लिए भी खुला रखा गया था।

श्री नारायणराव भंडारी?

प्रदर्शनी के प्रवेश द्वार पर एक बड़े चित्र के साथ नारायणराव भंडारी का जीवन परिचय दिया गया था। नारायणराव भंडारी जी का जन्म महाराष्ट्र के नासिक जिले के मुलेर गांव में 1925 में हुआ था। बचपन तथा प्राथमिक शिक्षा नंदुरबार जिले के तलोदा में पूर्ण हुई। 1949 में देश एक कठिन समय से गुजर रहा था उसी समय राष्ट्र कार्य हेतु घर छोड़कर संघ प्रचारक बनने का उन्होंने निर्णय लिया। 1950 में मेहसाणा जिला के वडनगर में प्रचारक के नाते संघ का कार्य प्रारंभ किया। साधना साप्ताहिक के लिए भी उन्होंने कार्य किया। प्रचारक जीवन से लौटकर प्राध्यापक के नाते पढ़ाते हुए वह कार्य करते रहे। 1964 में स्व. यशवंत राव केलकर तथा स्व. लक्ष्मणराव इनामदार (वकील साहब) के आग्रह पर उन्होंने अभाविप का कार्य प्रारंभ किया। 1967 में हैदराबाद में हुए राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए। राष्ट्र कार्य के साथ - साथ गुजरात प्रांत के कार्य को विकसित एवं समृद्ध करने में वे जुटे रहे। 1969 में गुजरात के मोरबी शहर में आई बाढ़ की आपदा के समय राहत कार्य में गुजरात अभाविप की छात्रशक्ति को जोड़ने का श्रेय श्री नारायणराव को जाता है। अहमदाबाद के पालड़ी स्थित उनके निवास स्थान से ही अभाविप का कार्य प्रारंभ हुआ था। 1971से यह स्थान संपूर्ण रूप से विद्यार्थी परिषद् का कार्यालय बना, बाद में उन्होंने अभाविप को यह निवास स्थान प्रदेश कार्यालय हेतु समर्पित कर दिया। गुजरात से प्रारंभ हुए नवनिर्माण आंदोलन के पीछे भी नारायण भाई खड़े रहे और यहीं से नवनिर्माण आंदोलन का संचालन करते रहे।

स्वामी विवेकानंद के बताये रास्ते पर चलने का संकल्प

पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का पताका फहराने वाले मनीषी स्वामी विवेकानंद की 156 वीं जयंती को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने धूमधाम से मनाया एवं कार्यकर्ताओं को उनके बताये रास्ते पर चलने का संकल्प दिलाया। राष्ट्रीय युवा दिवस के मौके पर अभाविप ने शोभा यात्रा, रक्तदान शिविर, मैराथन, संगोष्ठी आदि के माध्यम से विवेकानंद को याद किया। गोरक्ष प्रांत के कुशीनगर में विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने विशाल शोभा यात्रा निकाली और पूरे शहर का भ्रमण किया। गोरक्ष प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री आनंद गौरव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद लाखों – करोड़ों युवाओं के आदर्श हैं उन्होंने पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का डंका बजाया। हम सभी अगर उनके बताये मार्ग पर चलें तो वह दिन दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व गुरू कहलायेगा। मौके पर स्थानीय पुलिस अधीक्षक ने भी अपने विचार रखे।

वहीं कश्मीर घाटी में संगोष्ठी आयोजित कर स्वामी विवेकानंद के जीवन से छात्रों को अवगत करवाया। घाटी में परिषद् के संगठन मंत्री अजीत उपाध्याय ने विवेकानंद के विचारों को कश्मीर घाटी से जोड़कर प्रेम, भाईचारा और शांति की बात की। उन्होंने बताया कि स्वामी जी ने अपना जीवन देश की चेतना को जागृत करने में ही व्यतीत कर दिया, उनका पूरा जीवन ही राष्ट्र को समर्पित था। उनेक मार्ग में भी कई चुनौती आये लेकिन वे आखिर तक अडिग रहे। उनकी विचारों को आत्मसात कर हम कश्मीर सहित पूरे भारत की तकदीर को उज्जवल बना सकते हैं। अभाविप दिल्ली प्रांत में युवा दिवस के मौके पर भव्य शोभायात्रा निकालकर स्वामी विवेकानंद को याद किया गया। मध्यभारत में अभाविप ने प्रांत के सभी जिलों के विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं विद्यालयों में शोभायात्रा, वाहन रैली, संगोष्ठी, प्रतियोगिता, रक्तदान आदि कार्यक्रम किये गये। प्रांत मंत्री निलेश सोलंकी ने बताया कि विद्यार्थी परिषद् का प्रत्येक कार्यकर्ता चाहे किसी भी परिसर का हो वह स्वामी विवेकानंद के सपनों का भारत बनाने के लिए कार्य कर रहा है। इंदौर में अभाविप के द्वारा क्रिकेट टुर्नामेंट का आयोजन किया गया था,जिसका उदघाटन क्षेत्रीय संगठन मंत्री चेतस सुखाड़िया ने किया। वहीं मुरैना में शोभायात्रा का नेतृत्व प्रांत सह मंत्री आशीष वर्मा कर रहे थे जबकि शिवपुरी में मंचीय कार्यक्रम की अध्यक्षता रोहिन राय ने की। युवा दिवस पर पूरे प्रांत में लगभग 12 हजार छात्रों ने भाग लिया। ■

आतंकवादियों से कम खतरनाक नहीं है शहरी नक्सलः आशीष चौहान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए महानगर संगठन मंत्री, थिंक इंडिया संयोजक, राष्ट्रीय मंत्री और एक बार फिर राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में पुनर्निवाचित आशीष चौहान मूलतः हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रोहडू से हैं। श्री चौहान वर्ष 2003 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के संपर्क में आये। इन्होंने शैक्षणिक जीवन में कई आंदोलनों का नेतृत्व किया। श्री चौहान वर्तमान में India – China Youth Dialogue के महासचिव भी हैं। विद्यार्थी परिषद् के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पुनर्निवाचित राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान से राष्ट्रीय छात्रशक्ति के सहायक संपादक अजीत कुमार सिंह ने बात की। प्रस्तुत हैं बातचीत के अंश .....

इन दिनों देश भर में शहरी नक्सल पर काफी चर्चा हो रही हैं, इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

पहले लोग आर्थिक घोटाला करते थे कानून उस पर कार्रवाई करता था लेकिन आजकल अजीब तरह के घोटाले सामने आ रहे हैं वह है राष्ट्र की अस्मिता को ताक पर रखकर राष्ट्र के अंदर अराजकता का घोटाला...जिसका नाम है 'अर्बन नक्सल'। ये लोग समाज की विभाजनकारी ताकतों को न केवल बढ़ावा देते हैं बल्कि उसको आगे बढ़ाने और लोगों के बीच अविश्वास की भावना को विकसित करने के लिए हर वो कदम उठाते हैं जिससे देश में अविश्वास का माहौल बने एवं उसकी जो कल्पना है कि सत्ता बंदूक की नोक से होकर गुजरती है, साकार करने का प्रयत्न करते हैं। इनके समर्थन में शहरों में बुद्धिजीवी, पत्रकार, शिक्षक व विभिन्न मंचों पर काम करने वाले लोग हैं। प्रजातंत्र का चादर ओढ़कर ये लोग राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को अंजाम देते हैं। विद्यार्थी परिषद् इन शहरी नक्सलियों से लगातार लड़ती आई है। विद्यार्थी परिषद् ने शहरी नक्सलियों को लेकर एक प्रस्ताव भी पारित किया है जिसमें हमने सरकार एवं यूजीसी से मांग की है कि ऐसे शहरी नक्सल जिसपर अदालत में मुकदमा चल रहा है या फिर अदालत ने जी.एन. साईंबाबा की तरह सजा सुनाई है वैसे लोगों को विश्वविद्यालय से निकाला जाना चाहिए और उनके द्वारा लिखे गये साहित्य पर एक रिव्यू कमेटी बनाकर उस पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। ये शहरी नक्सली सीमा पार से आने वाले आतंकवादी से कम खतरनाक नहीं हैं।

राम मंदिर निर्माण पर परिषद की क्या राय है?

राम मंदिर का निर्माण आस्था का विषय है। राम मंदिर

का निर्माण अवश्य होना चाहिए। विद्यार्थी परिषद् ने 1992 - 93 और 2010 में भी अपने संकल्प पत्र में राम मंदिर निर्माण पर प्रतिबद्धता जताई है। प्रभु श्रीराम न केवल आस्था बल्कि भारत के लिए सांस्कृतिक विरासत भी हैं। आसियान देशों में रामायण का पाठ होता है। कंबोडिया, साऊथ लाओस, साउथ कोरिया जैसे देशों से जुड़ने का कहीं न कहीं माध्यम श्रीराम हैं। विद्यार्थी परिषद् का स्पष्ट मत है कि अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण हो, इस संदर्भ में परिषद् अदालत से भी विनम्र आग्रह करती है जन भावनाओं का ख्याल रखकर इस पर द्रुतगति से कार्यवाही करें।

पिछले दिनों अभाविप ने 'चलो कोलकाता' के नाम से बड़ी रैली की थी, कृपया इस रैली के बारे में बतायें?

पश्चिम बंगाल के उत्तरी दिनाजपुर जिले की इस्लामपुर तहसील के अंदर दारिवीट नाम का गांव है। यहां से कुछ ही दूरी पर बांग्लादेश की सीमा है। दारिवीट स्थित विद्यालय के छात्र विज्ञान, बंगाली व संस्कृत शिक्षक की मांग कर रहे थे, इसके स्थान पर वहां पर उर्दू शिक्षक की नियुक्ति की गई, जबकि वहां पर पढ़ने वाले छात्र बांग्लाभाषी हैं, जबरन उस पर उर्दू शिक्षक थोपी गई। छात्रों ने इस पर विरोध करना शुरू किया। ममता सरकार को छात्रों का विरोध नागवार गुजरा और पुलिस ने गोलीबारी शुरू कर दी गोलीबारी मे राजेश सरकार एवं तापस बर्मन की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात इस घटना को लेकर परिषद् ने सीबाआई से जांच करवाने की मांग की। सरकार पीड़ित परिवार से मिलने तक को तैयार नहीं। बांग्लादेश से सटे इलाकों की जनसांख्यिकी बिगड़ चुकी है, बांग्लादेशियों के द्वारा गांव के गांव बसाये जा चुके हैं। स्थानीय नागरिकों के ऊपर पहचान का संकट आ चुका है। भारत को तुष्टिकरण की आड़ में ये लोग पाकिस्तान बनाने पर तुले हैं। एनआरसी लागू होने पर घुसपैठियों की पहचान होगी और बांग्लादेशी घुसपैठियों को वापस उनके देश भेजा जा सकेगा। दारविट की घटना में मारे गये दोनों छात्रों के मौत की निष्पक्ष जांच, दोषियों पर कार्रवाई एवं एनआरसी की मांग को लेकर अभाविप ने चलो कोलकाता रैली का आह्वान किया था, जिसमें हजारों - हजार छात्रों ने भाग लिया। विद्यार्थी परिषद् ने एनआरसी को पूरे देश में लागू करने की मांग की है। एनआरसी का विषय भारत की नागरिकता के साथ जुड़ा हुआ है, जो लोग भारत के बाहर से आये हैं उन्हें भारत से बाहर करना ही चाहिए।

अपने पिछले एक वर्ष के कार्यकाल को आप किस प्रकार से देखते हैं?

वर्ष 2017 - 18 में अभाविप ने चार बड़े अभियान शुरू किये। हमने मिशन साहसी का अभियान शुरू किया, इस अभियान के माध्यम से लगभग सात लाख छात्राओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया, सेल्फी विद कैंपस के माध्यम से हम 46 हजार विश्वविद्यालय/ महाविद्यालय/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक पहुंचे। देश के सुदूर क्षेत्र में जाकर भी कार्यकर्ताओं ने सेल्फी विद कैंपस का अभियान चलाया है। इसी तरह छात्रावास संपर्क अभियान शुरू किया गया और इसके तहत छात्रावासों में रहने वाले अनुसूचित जाति/ जनजाति समुदाय के छात्रों से सीधे संवाद स्थापित किया और चौथा अभियान हमने 'सामाजिक अनुभूति' का लिया ताकि शहर में रहने वाले छात्र ग्रामीण जीवन का प्रत्यक्ष दर्शन कर सके।

छात्रावास संपर्क अभियान का कोई ऐसा अनुभव जिसने आपको प्रभावित किया हो।

छात्रावास संपर्क अभियान के दौरान छत्तीसगढ़ के गोपालपुर स्थित एक छात्रावास की घटना ने मुझे काफी विचलित किया है। यह इलाका आंध्रप्रदेश की सीमा पर अवस्थित है, छात्रावास के अंदर जब हमारे कार्यकर्ता गये तो पता चला कि माओवादी/नक्सली छात्रों को कूरियर बॉय की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। छात्रों से दवाई, जरूरत के छोटे - मोटे समान मंगवाते हैं, डर के मारे उन्हें जाना पड़ता है। एक तरफ माओवादी दूसरी तरफ पुलिस, दोनों के डर से छात्र काफी सहमे - सहमे से रहते हैं। अभाविप का स्पष्ट मत है कि छात्रों के मन से नक्सलियों का डर खत्म किया जाय और छात्रावास के अंदर ऐसे कौन से तत्त्व हैं जो नक्सलियों को इतनी छूट देते हैं कि नक्सली, छात्रों को कूरियर बॉय के रूप में इस्तेमाल करते हैं। ■

ABVP 64th National Conference Resolution No. 1

Demand to refine the system of Under Graduate Education

The concept of education revolves around the student and the teacher as they are the fundamental central and indispensable organ of the education system. The method of education has been based on the conversations and interactions between Guru and Shishya for a long time. The reason behind the fundamental quality of educational institutions is the knowledge and ethics of the teachers. Hence, short term, Ad-Hoc and contract-based appointments is an atrocity to the long-term vision of cosmopolitan education. Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad in it's 64th National Conference demands that the process of filling vacancy for permanent teachers should be immediately started.

Inclusion of various methods in syllabus and teaching are important aspects under several stages of imparting education becomes self-contained. Even after graduating from leading higher educational institutions like IIT, NIT etc., there remains a need for software companies to train the students for 6 months. Also lack of upgradation and sociable skills in the syllabus makes it deficient in qualitative excellence. Hence, upgradation of all the syllabi must be ensured within a gap of maximum three years.

In the process of assimilation in the matter of education, a picture of various procedures of learning comes in a wide format in which learning through creativity, inspiration and experience is found to be most influential form of education, but semester system creates dearth of time for such practices. Frequency of exams and extracurricular informality in education with timeline of evaluation, lack of time for co-curricular activities and academic activities are constantly becoming barriers in informal and empirical education of a student which is affecting their continuous development. At the same time, consideration of semester system as a standard system by NAAC and mandatory implementation of this system in colleges with lack of infrastructure makes it a compulsive. Hence, ABVP in its 64th National Conference demands replacement of semester system with annual system in general courses immediate.

CBCS in graduation has been established as a sure shot solution in present education system but ever since the announcement of RUSA in 2013 none of the universities has given choices on the basis of 'market place of courses'. For instance, in a survey conducted by ABVP in all the colleges of Odisha has yielded the non-availability of choices under the CBCS system. Hence, ABVP in its 64th National Conference demands interstate, inter college and inter university choices to be provided by government under CBCS as early as possible.

ABVP also believes that as per AISHE report India has 15 crore youth between the age of 18-23 years. To bring this youth under the roof of higher education, ABVP ponders upon the need of expanding the boundaries of higher education in various institutions, colleges and universities. ABVP also strongly believes that there is a need for inclusion of quality education in the curriculum via opting for inter disciplinary education to bring important changes in B.A, B.Sc and B.Com courses.

In the international context, leading universities conduct the courses of science, law, journalism, dance, humanities and management simultaneously in the same campus. Yashpal Committee of 2009 has strongly recommended to implementation of the same in India.

Hence, ABVP's 64th National Conference strongly suggests to implement the findings of the Yashpal Committee effectively.

ABVP has consistently raised issues relevant to education through our resolutions. Therefore, 64th National Conference of ABVP demands immediate implementation of the National Education Policy to bring about a system which embarks on constitutional values emphasizing on Indian ethos and focuses on employability of youth to take a firm step towards realizing the aim of Bharat Gaurav. ■

उभरता भारत नई आशाएं

इस देश की सनातन संस्कृति के आधार पर आगे बढ़ने की क्रिया है उभरता भारत। यूरोप के किसी देश के शक्तिशाली होने से विश्वयुद्ध होता है लेकिन भारत का सामर्थ्य बढ़ने से किसी को डरने की जरूरत नहीं है। क्योंकि -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखभाग् भवेत।।

अर्थात सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय के साथी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े। यह भारतीय संस्कृति का आधार है। भारत ने कभी भी अपने देश को अंतिम नहीं माना बल्कि पूरे विश्व को परिवार मानता है, कुटुंब मानता है। भारत के लोग अपनी मातृभूमि की वंदना करते हैं, वंदे मातरम कहते हैं इसे ही उभरना कहते हैं। भारत पहले विश्वगुरु था और फिर से विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर है। अगर पिछले एक दशक पर, खासकर पिछले पांच वर्ष पर नजर डालें तो अपनी संस्कृति के साथ मेरा देश प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है।

सुरक्षा

देश की सुरक्षा व्यवस्था पर अगर गौर करें तो वर्तमान सरकार ने सुरक्षा तंत्र को पूर्व की अपेक्षा और अधिक मजबूत किया है। सरकार ने सेना को खुली छूट दे रखी है परिणामस्वरूप आतंकियों को कश्मीर में ही मार दिया जाता है। इतना ही नहीं भारत सरकार ने एनआईए की मदद से आतंकवादियों के आर्थिक ढ़ांचे को तहस - नहस कर दिया जिस कारण आतंकी वारदातों में काफी कमी आई है। देश के लोगों की दिलचस्पी बढ़ाने एवं स्वदेशी कंपनियों की सहभागिता बढ़ाने के लिए सरकार ने निजी कंपनियों की इंटेग्रिटी की जांच कर काम शुरू किया, लगभग दो सौ कंपनियों ने इसमें प्रतिभाग लिया। उन दो सौ कंपनियों को लग रहा है कि उनके यहां बने हथियार, सामान देश की सुरक्षा में आयेंगे। कंपनी लाभ के लिए नहीं वरन देश की सुरक्षा में स्वयं के योगदान हेतु पूरे मन से कार्य कर रही है। आज हर कार्य में सर्व - सहभागिता देखने को मिल रही है, देश का प्रत्येक नागरिक खुद को सहभागी महसूस कर रहा है, यह उभरते भारत की तस्वीर है। वर्तमान सरकार ने सत्ता पर आते ही सबसे पहले सैनिकों का ख्याल किया। वर्षों से लंबित वन रैंक - वन पेंशन की मांग को पूरा किया, हो सकता है इस प्रक्रिया में खामियां रह गई हो लेकिन सरहद की रक्षा करने वाले जवानों की चिंता तो की, उनके सम्मान का ख्याल तो रखा। डोकलाम मुद्दे पर जिस तरह भारत सरकार ने सूझबूझ और कूटनीति से काम लिया वह प्रशंसायोग्य है। एक तरफ विदेश मंत्री बातचीत के जरिये हल करने की बात कर रही थीं वहीं दूसरी तरफ डोकलाम में छः फुट के सिख रेंजीमेंट को तैनात कर दिया, जिससे चीन का सिर चकरा गया और उसे डोकलाम मुद्दे पर पीछे हटना पड़ा। भारत के इस रूख से पूरे विश्व में यह संदेश गया कि भारत छोटे देशों की न्याय के लिए प्रतिबद्ध है। चीन को मालूम होना चाहिए कि 1962 का भारत अब नहीं है। आज का भारत आंख में आंख डालकर जवाब देने की ताकत रखता है, यही उभरता भारत है। सरदार पटेल ने 1950 में एक चिट्ठी में कहा था कि चीन और अतिवादी वामपंथ विचार देश की एकता के लिए खतरा है। 2006 में आंतरिक

सुरक्षा पर तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने भी उक्त बातों का जिक्र किया था। आंतरिक सुरक्षा पर विशेष ध्यान, उभरता भारत का एक भाग है।

संयोजकता (Connectivity)

पहले की तुलना में संयोजकता (Connectivity) भी बढ़ी है। उदाहरण के तौर पर पूर्वोत्तर का एक किसान पहले हल्दी उपजाता था तो पास के ही व्यापारी के पास औंने - पौने दाम में उसे बेच देता था लेकिन आज का किसान, खासकर युवा किसान, इंटरनेट के माध्यम से बैंगलोर, दिल्ली की मंडियों में हल्दी के दाम का पता करता है तब व्यापारी से मोल - भाव कर अपने सामान का सौदा करता है। मैं महाराष्ट्र से हूं। मेरे यहां बहुतायत मात्रा में गन्ने की खेती होती है। गन्ने के खेतों के आस - पास में चीनी की मिलें हुआ करती हैं और चीनी मिल के मालिक किसानों से अपने मनमाफिक दर पर गन्ना खरीदता था लेकिन डिजिटल बाजार आने से किसानों का शोषण कम हुआ है। अब किसान भारत के अन्य बाजार में गन्ने का भाव जानने के बाद अपनी फसल बेचते हैं। यह उभरते भारत की परिणति है, आज से दस साल पहले कल्पना कीजिए, मोबाईल का डेटा कितना मंहगा था और वर्तमान में क्या है? डेटा सस्ता होने एवं मोबाईल संयोजकता बढ़ने के कारण लोगों को व्यवसाय करना आसान हो गया है। घर बैठे लोग अब देश भर की मंडियों का दर पता कर लेते हैं।

यातायात

हमारे यहां के एक नेता हैं जो पहले महाराष्ट्र के सड़क निर्माण मंत्री थे उनका नाम है नीतिन गडकरी जिसे लोग रोड निर्माण गडकरी कहने लगे थे क्योंकि वे रोड ही बनाते थे। केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री के बाद भी नीतिन गडकरी वही काम कर रहे हैं। देश भर में सड़कों का जाल बिछा रहे हैं, यातायात को सुगम बना दिया है। पहले समुद्र में मालवाहक जहाज से सामानों को ढ़ोया जाता था वर्तमान सरकार ने देश के भीतर नदियों के जरिये माल ढ़ोने की शुरूआत की है, जिसका पहला खेप कलकत्ता से प्रयागराज पहुंच चुका है। किसी ने कल्पना की होगी कि भारत में नदियों के जरिये यातायात संभव हो पायेगा। जल यातायात शुरू होने से काफी बचत होने लगी है। कुछ दिन पहले मैंने एक वीडियो देखा उसमें दिखा रहा था कि भारत में 180 कि.मी./घंटा से ट्रेन चलने वाली है जिसका नाम टी - 18 दिया गया है और इसका शत प्रतिशत निर्माण कार्य भारत में हुआ है, यह उभरते भारत की पहचान है।

जगती आशाएं

देश जब उभरता है तो लोगों में आशाएं भी जगने लगती है। मान लीजिए जब पहली बार कोई वृद्ध महिला जिसकी आयु 70 के लगभग होगी, बिजली के बल्ब को जलते देखेगी तो उसके मन में भी आशा जगेगी। उसके सामने अपने समय की स्वदेश फिल्म का कोई दृश्य याद आयेगा, कुल मिलाकर उसके मन में आशाएं जगेंगी। उभरते भारत और नई आशाएं का एक और उदाहरण आपको बताता हूं कि एक बार पूर्व राष्ट्रपति स्व. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने एक विद्यालय की छात्रा को ऑटोग्राफ देते हुए पूछा कि आपके मन में आशा क्या है तो उस बच्ची ने जवाब दिया कि मैं विकसित भारत देखना चाहती हूं न कि विकासशील भारत...। इतने कम उम्र के बच्चे भी व्यक्तिगत आकाक्षांओं से ऊपर उठकर देश को समृद्ध बनाने की आशा कर रहे हैं। विगत दशकों में हमने फसलों की पैदावार को बढ़ाने पर ध्यान दिया, अपेक्षित सफलता भी मिली लेकिन क्या हमने उस किसानों के जीवनस्तर को आगे बढ़ाने के बारे में सोचा? नहीं ! लेकिन आज के युवा फसल के साथ - साथ किसानों के जीवन स्तर को बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रकल्प एग्रीविजन का ध्येय वाक्य दिया है - "समन्वित कृषि - समृद्ध भारत" किसानों की स्थिति को सुधारने के लिए अब समन्वित कृषि पर ध्यान देना आवश्यक है। पहले कृषि शिक्षा में स्नातक - परास्नातक करने के बाद आईएएस, आईपीएस बनने के लिए प्रयास करते थे लेकिन आज परिस्थितियां बदली है। आज के युवा कृषि की ओर उन्मुख हो रहे हैं। देश के अंदर लोग चाहते हैं कि उन्हें रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई और पढ़ाई का समुचित लाभ मिल सके साथ ही उनकी बच्चियां बेखौफ होकर कहीं भी, किसी भी समय जा - आ सके। तीन - चार दिन पहले मैं कॉफी विद करण का शो देख रहा था उसमें तीन फिल्म निर्देशक पहुंचे थे उसमें से एक राजामौली भी थे, राजमौली के बारे में आपलोग जानते हैं कि उन्होंने बाहुबली फिल्म बनाई थी जिसने देश - विदेश में लगभग 2000 करोड़ की कमाई की, बाहुबली ने क्यों कमाई की आपलोग जानते

हैं। बाहुबली ने इसलिए कमाई की क्योंकि उसने भारत की सनातन संस्कृति को दर्शाया। भले ही माहिष्मति साम्राज्य देश में कहीं न हो, भले ही यह काल्पनिक हो लेकिन देश के लोगों ने खुद की संस्कृति से जोड़कर देखा, अपनी संस्कृति का गौरवगान देखा।

वर्तमान परिदृश्य में लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति सजगता बढ़ी है खासकर युवा वर्ग में, आज के युवा भारतीय सनातन संस्कृति को लेकर काफी सजग हो गये हैं। वे किसी भी कीमत पर अपनी संस्कृति के साथ समझौता करना नहीं चाहते, यह उभरते भारत का सबसे बढ़िया उदाहरण है। कुछ दिन पहले एक संस्थान के द्वारा देश भर में युवाओं के बीच सर्वेक्षण कर उनके विचार को जानने की कोशिश की। सर्वेक्षण के मुताबिक देश के 40 फीसद युवाओं ने देश के विकास में सहभागी होने की बात कही वहीं 37 फीसद युवा ने पढ़ लिखकर स्व - उद्यमिता (एंटरप्रनोयरशिप) की बात की। यह उभरते भारत की नई आशाएं हैं जो दिख रही हैं। कुछेक मात्रा में ही लेकिन अब लोग रूरल टूरिज्म पर काम कर रहे हैं, चूंकि महानगरों में रहने वाले लोग चाहते हैं कि साल के कुछ दिन ऐसे वातावरण में बिताये जहां पर सुकून हो, साफ - स्वच्छ हवा हो, सब कुछ ऑर्गेनिक मिले और वह गांव - देहात में ही मिल सकता है। योग, रूरल टूरिज्म के क्षेत्र में रोजगार की संभावना बढ़ रही है। करीब एक दशक पहले युवाओं के मन में चाहत होती थी कि भारत से निकलकर विदेशों में पढ़ाई कर वहीं पर स्थापित हो जायें ताकि यहां की झंझटों में पड़ना न पड़े लेकिन वर्तमान परिदृश्य में स्थिति बिल्कुल उलट है आजकल युवा पढ़ाई करने तो विदेश जरूर जाते हैं वहां से पीएचडी करते हैं लेकिन उसके मन में देश के लिए कुछ करने की ललक होती है। वे चाहते हैं कि अपनी शिक्षा पूरी कर अपने देश में कुछ उद्यम करें, कुछ ऐसा काम करें ताकि देशवासियों का भला हो, मेरा देश समृद्ध हो यानी भारत के बारे में ब्रेन ड्रेन की बात कही जाती थी वह धीरे - धीरे समाप्त हो रही है, यह उभरते भारत के लिए सुखद पल है। ■

नागरिकता संशोधन विधेयक 2016 का अभाविप ने किया स्वागत

लोकसभा में पारित नागरिकता संशोधन विधेयक 2016 का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने स्वागत किया है। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने इस मुद्दे पर कहा कि हम इस विधेयक का हार्दिक स्वागत करते हैं। पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों को ध्यान में रखते हुए, राज्यसभा में इस विधेयक को शीघ्र ही पारित किया जाना चाहिए ताकि इस विधेयक को लागू करने का रास्ता खुल सके। उन्होंने कहा कि भारत की स्वतंत्रता के बाद से ही बुनियादी मानवाधिकारों के लिए दशकों तक इन प्रताड़ित शरणार्थियों को जूझना पड़ा है। लंबे समय से प्रतीक्षित यह विधेयक अफगानिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आए सिख, बौद्ध, हिंदू, पारसी और ईसाई शरणार्थियों, जो लंबे समय से पूरे भारत में विभिन्न स्थानों पर रह रहे हैं, को भारतीय नागरिकों की भांति ही समानता देगा तथा न्याय हेतु सक्षम करेगा। इन अल्पसंख्यकों का पांथिक उत्पीड़न करते हुए विधिवत राज्य द्वारा संरक्षित कट्टरपंथियों ने उपरोक्त देशों में इन पर अत्याचार कर इनकी जनसंख्या का स्तर बड़ी मात्रा में घटा दिया है।

श्री चौहान ने कहा कि अभाविप पूर्वोत्तर राज्यों में अपना आधार खो चुके असामाजिक तत्त्वों द्वारा जनभावनाओं को नजरअंदाज करते हुए नागरिकता संशोधन विधेयक और राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) के मुद्दे का नाजायज ढ़ंग से इस्तेमाल करते हुए अपने राजनीतिक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए किये जा रहे झूठे प्रचार की निंदा करती है। उन्होंने कहा कि हम नागरिकों से आग्रह करते हैं कि कुछ लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली विभाजनकारी रणनीति के शिकार न हों और शांति बनाए रखने में अपनी भूमिका तय करें। राजनीतिक दलों को भी क्षुद्र वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र के बारे में सोचना चाहिए। अभाविप हमेशा से पूर्वोत्तर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है तथा पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक संरक्षण हेतु सदैव कार्यरत रहेगी। ■

महात्मा गांधी की सार्धशती पर विशेष आलेख शृंखला - 5

भारतीय चिति और सत्याग्रह की समझ

।डा. जयप्रकाश सिंह।

गांधी का विशुद्ध बौद्धिक अथवा खांटी राजनीतिक आकलन अनेक बार हमें पशोपेश में डाल देता है। इन पैमानों पर किया गया आकलन गांधी की आधी - अधूरी समझ तो बनाता ही है, प्रायः हमें गलत निष्कर्षों पर भी पहुंचाता है। उनकी समस्त गतिविधियों के केन्द्र में भारतीय समाज का यथार्थ है और उस यथार्थ को बेहतरीन ढंग से सम्बोधित करने की क्षमता उनकी सबसे बड़ी योग्यता है।

गांधी की कोशिश भारतीय चिति को पकड़ने की है लेकिन वह औपनिवेशिक शासन के कारण पैदा हो रहे परिवर्तनों के प्रति भी पूरी तरह सजग थे। उनके राजनीतिक कार्यक्रमों में इन दोनों पक्षों के बीच संतुलन स्थापित करने की कोशिश स्पष्ट दिखती है। उनकी राजनीतिक - आंदोलनात्मक गतिविधियों के केन्द्र में रहे सत्याग्रह की संकल्पना को इसी परिप्रेक्ष्य में ठीक ढंग से समझा जा सकता है।

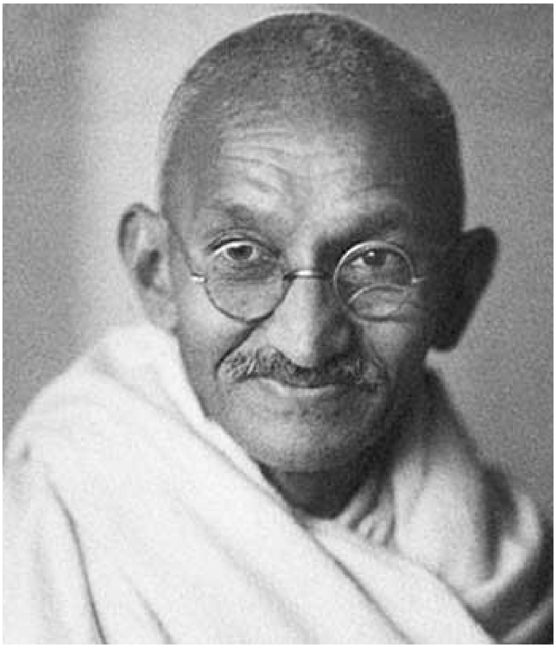

उनके लिए सत्याग्रह शाश्वत मूल्य और आत्मअनुभूति की साधना भी है और स्वराज प्राप्ति के लिए आवश्यक - सामयिक उपकरण भी। वह इस बात को मान चुके थे कि भारतीय चिति की अंतिम अभिलाषा पूर्ण सत्य को जानने की है। और भारतीय जनमानस में अब भी यह बात गहरे तक बैठी हुई है। जब वह कहते हैं कि 'सत्य ही ईश्वर है' तो वह भारतीय जनमानस की चरम अभिलाषा को अभिव्यक्ति दे रहे होते हैं।

गांधी ने सत्य के प्रति आग्रह की इस प्रवृत्ति को अपनी मुख्य - कार्ययोजना बनाया ही, इसका इतना अधिक विविधीकरण कर दिया कि हर भारतीय इसमें शामिल हो सके। राजनीतिक कार्यक्रमों के विविधीकरण की यह योग्यता ही गांधी को अन्य नेताओं से अलग और अलहदा बनाती है। वह किसी दर्शन को, किसी कार्य - योजना को इतने सामान्य स्तर तक ले आते थे कि आम व्यक्ति भी उससे जुड़ सके। उन्होंने असहयोग, सविनय अवज्ञा, धरना, खादी, चरखा, सूत कातना - सबको सत्याग्रह का पर्याय बना दिया और आम भारतीय में यह विश्वास भर दिया कि वह भी देश के लिए कुछ महत्वपूर्ण कर सकता है।

विभिन्न आघातों और निराशाओं के बीच गांधी का सत्याग्रह के प्रति आकर्षण कभी भी कम नहीं हुआ। उनके लिए व्यक्तिगत या सार्वजनिक सत्याग्रह एक आध्यात्मिक साधना थी। वह मानते थे कि सत्याग्रह सीधी कार्रवाई का सबसे ताकतवर उपकरण था लेकिन वह यह भी मानते थे कि इसका उपयोग मनमाने तरीके से नहीं किया जाना चाहिए। अन्य उपलब्ध सभी तरीकों का उपयोग किए जाने के बाद ही सत्याग्रह का उपयोग किया जाना चाहिए।

सत्याग्रह के मूल तत्त्व की तरफ संकेत करते हुए गांधी कहते हैं कि सत्याग्रह के पहले वह जनमत

से आग्रह करेंगे, जनमत को शिक्षित करेंगे हर उस व्यक्ति से शांतिपूर्ण ढंग से बात करेंगे जो समस्याओं को सुनना चाहेगा। इसके बाद ही सत्याग्रह के तरीके का उपयोग करेंगे। सत्याग्रह के साधनात्मक पक्ष के बारे में बात करते हुए वह कहते हैं कि - सत्याग्रह बहुत सहज है, यह कभी घाव नहीं देता। यह क्रोध अथवा दुराग्रह का प्रतिफल नहीं है। यह उद्वेग अथवा अधैर्य की देन भी नहीं है। यह किसी बाध्यता की भी देन नहीं है। वस्तुतः यह हिंसा का सम्पूर्ण विकल्प है।

गांधी सत्याग्रह का विविधीकरण करने में कितना सफल होते हैं इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने पत्रकारिता को भी सत्याग्रह का एक अभिन्न हिस्सा माना। सत्य उनके लिए ईश्वर था और पत्रकारिता सच को अभिव्यक्त करने का जरिया। उन्होंने अभिव्यक्ति के दोनों स्वरूपों में निरंतर अपनी सक्रियता बनाए रखी। 'गांधी की शाब्दिक सक्रियता उनकी संचार करने, संवाद करने, खुद को अभिव्यक्त करने और लोगों से जुडे. रहने की उत्कट इच्छा का प्रतिफल थी। उनकी यह इच्छा इतनी प्रबल थी कि उन्होंने दोनों हाथों से लिखने की क्षमता विकसित कर ली थी।

उनकी सत्याग्रह की साधना में मीडिया - जागरूकता एक आवश्यक तत्त्व है। सत्याग्रह के दौरान सत्याग्रहियों के खिलाफ होने वाली एकतरफा हिंसा की विश्वव्यापी कवरेज होती थी और पत्रकार सत्याग्रह संबंधी आयोजनों को एक प्रमुख घटना के तौर पर लेते थे। औपनिवेशिक शासन से लड़ने में सत्याग्रह इतना प्रभावशाली कभी भी साबित नहीं होता यदि उसकी हृदय -विदारक खबरें और फोटो अखबारों में प्रकाशित नहीं होती।

गांधी जी ने यह बात अच्छी तरह समझ ली थी कि पत्रकारिता में बेहतरीन कवरेज का आधार सत्य होता है। पत्रकारिता की जान सत्याग्रह ही है, यही वह विश्वसनीयता पैदा करती है, जिसे इस क्षेत्र की सबसे बड़ी पूंजी माना जाता है। वह संदेशों का सम्प्रेषण सत्याग्रह के कलेवर में ही करते थे। सत्य को केन्द्र में रखकर संदेश गढ़ने की उनकी क्षमता पत्रकारों को भी हैरान कर देती थी। इसका एक बेहतरीन उदाहरण दांडी मार्च के दौरान की गई उनकी अपील थी। उन्होंने कहा था कि I want world sympathy in this battle of Right against Might उनकी इस अपील का दुनिया भर के अखबारों पर जादुई असर हुआ और यह दांडी मार्च कवरेज के लिहाज से एक प्रमुख आयोजन बन गया। अपनी इस पत्रकारीय समझ और संचारीय कौशल के कारण वह टाइम मैगजीन के 'मैन ऑफ द ईयर' बने।

गांधी ने सत्याग्रह को अपनी सभी राजनीतिक और व्यक्तिगत गतिविधियों को केन्द्र में रखकर भारत और भारतीय से जुड़ने का अभिनव प्रयास किया। सत्याग्रह के जरिए उन्होंने समावेशी लक्ष्य निर्धारित किए और उन्हें एक हद तक प्राप्त करने में सफलता भी प्राप्त की। गांधी ने उस समय सत्याग्रह की तकनीक के जरिए स्वराज के लक्ष्य को सबका लक्ष्य बनाने में एक हद तक सफलता प्राप्त की थी। भारत और भारतीयता, सबका स्वप्न बनें, इसकी जरूरत आज भी बनी हुई है। देखना यह है कि क्या आज का नेतृत्व ऐसी कोई राजनीतिक कार्य - योजना बना सकता है, जो समावेशी और भारतीय दोनों हो। ■

(लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय में जनसंचार विषय के सहायक आचार्य हैं।)

आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग को आरक्षण देना एक महत्वपूर्ण कदम : चौहान

केन्द्र सरकार द्वारा हाल ही में आर्थिक रूप से पिछड़े समान्य वर्ग को दस प्रतिशत आरक्षण दिये जाने पर खुशी जाहिर व्यक्त की है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि केन्द्र सरकार अभी तक अनारक्षित जातियों में आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग को दस प्रतिशत आरक्षण दिये जाने के निर्णय एवं देश की संसद के दोनों सदनों द्वारा 124 वां संविधान संशोधन विधेयकर पारित करने के कदम का अभाविप स्वागत करती है। अभाविप का मत है कि यह संशोधन शिक्षा एवं रोजगार के क्षेत्र में आर्थिक रूप से असमर्थ वर्ग के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। ■

ABVP 64th National Conference Resolution No. 2

Challenges ahead of India moving towards all round Development

The world's tallest statue built to offer true tribute to a great worshipper of National Unity Sardar Vallabh Bhai Patel, who united 563 princely states after independence, gives the country a new identity. It is an attempt to strengthen the unity and integrity of the country, which has given a distinct identity to the country at the international level. This 64th National Conferenceb of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad welcomes the initiative of various agencies working towards internal and external security of the country. ABVP will not fail to recognize the effort of ISRO in making GSAT 7A satellite, and the Indian Armed Forces which made it possible for India to have INS Arihant and K 9 Vajra for securing our country both internally and externally. Just recently, the Prime Minister has dedicated a Bogibeel Bridge which connects Dibrugarh in Assam to Arunachal Pradesh to the nation. This will prove to be a milestone in the direction of the development of the country, and the North East Regions. Establishment of New NIT's and IIT's will enable the development of technical education in the country which will prove to be helpful in the direction of the 21st century India's development. ABVP also welcomes the Uttar Pradesh government's step of reviving the civilization and culture by giving original names along with their original introduction to Prayagraj and Ayodhya.

The number of Naxal-affected districts has reduced from 128 to 82, due to People's increased faith in democracy in the country. The country has exhibited holistic development by making significant achievements in other areas, like in the 18th Asian Games and in the 11th Gold Coast Commonwealth Games, the country has performed it's best so far. The Government of India has also tried to answer concerns of the poor and the farmers by launching schemes like Ayushman Bharat, Swachh Bharat, Jan Dhan Yojana, Make in India, Ujwala Yojna, Sukanya Yojna Etc. These decisions of the government have tried to bridge the gap that existed earlier.

With the flow of positive energy, the country is committed to establishing new records globally in economic, social, spiritual and other fields. Although some political parties, media houses, and so-called intellectuals are still trying to divide the country on caste, class and regional basis. Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad urges them all to abandon such political and play their yole in ensuring that the freedom, integrity and sovereignty of this nation remains unharmed.

Killings of innocents and leaders in Jammu and Kashmir shows desperation and anxiousness of terrorists and exposes their evil intentions. On one hand the common students of Jammu and Kashmir are eager to study, on the other hand some from Kashmir Valley are hell-bent on defaming them. In Aligarh and some other universities of the country incessant attempts are being made to a hack the sovereignty and integrity of the country. ABVP's 64th National Conference demands identification of these people and stringent action against them.

Even in West Bengal law and order situation is worrying. The killings of students Rajesh Sarkar and Tapas Barman who were asking for Bangla language is extremely shocking. Due to her appeasement politics, Mamta Banerjee government has completely ignored the demands of women and other residents Daribhit who have been protesting for last three months. The last rites of Tapas and Rajesh have been performed because the govt. has still not ordered re-postmortem of their bodies. Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad condemns the inaction of state government in strongest words.

Social media, amazon, Netflix, zee etc.

by the web series are working to break the society, encourage crimes, create caste conflict and serve obscenity. ABVP expresses concern over these activities as by these acts' seeds of crime, social fragmentation, caste conflicts etc are germinating in the minds of youth. ABVP demands that government should monitor these fake news portals, web series, etc. by means of an independent body and take fast and stringent actions.

It is a clear opinion of 64th National Conference of ABVP that the increasing number of intruders in Leh Ladakh, Kerala, Odisha, Maharashtra and all other places is becoming a challenge for internal security by destroying the social and religious fabric. ABVP demands from the government that ambit of NRC is expanded from Assam to whole country; so that country's social, religious and economic structure can be strengthened.

The growing acceptance of India on global stage has rattled of the powers acting against nation due to which the political parties are continuously trying to obstruct the functioning of parliament and distracting the youth from their intrinsic issues. This 64th National conference of ABVP gives a clarion call to, the youth, intellectuals and all the sections of society that they, with strong political will, stand with the significant attempts to take the country forward and give a fitting reply give a befitting reply to the hurdles that come in the way of nation's progress by playing their role and deciding responsibility for self. ■

शपथ

सुनहरे भविष्य के लिए आज करें वोट

दुनिया के सबसे बड़े व सशक्त लोकतंत्र के रूप में भारत की स्थापना में चुनावों की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसमें युवाओं की भूमिका बहुमूल्य है। स्वतंत्र भारत में युवाओं ने सही प्रकार के प्रतिनिधियों को चुनकर, हमारे शासन-तंत्र को सशक्त किया है। आगामी चुनाव के नज़दीक आने के साथ हम युवाओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि चुनाव की विश्वसनीयता व शुचिता बनी रहे ताकि लोकतंत्र सुचारू रूप से गतिमान रहे।

हम यह भी पाते है कि कुछ दुर्जन शक्तियां समाज व देश के सकारात्मक वातावरण को बिगाड़ने के लिए देश की अखंडता व अस्मिता, सुरक्षा, विकास यात्रा के साथ साथ सनातन संस्कृति के आस्था मूल्यों को खंडित करने का प्रयास कर रहे है। ये स्वार्थी समूह दुष्प्रचार करके निराधर विवाद व मुद्दे, जैसे जातीय आधार पर तोड़ने की कोशिश या राफेल जैसे महत्वपूर्ण रक्षा सौदों को अपने राजनीतिक हितों को साधने के लिए भ्रष्टाचार के आरोप लगा कर, या आस्था पर प्रहार करके प्रगति पथ पर अग्रसर भारत राष्ट्र की गति शिथिल करना चाहते है। हाल ही में कुछ नकारात्मक संगठन NOTA का प्रसार कर रहे है जो कि मात्र नकारात्मक राजनीति का ही एक विकृत स्वरुप है जिससे मताधिकार जैसे महत्वपूर्ण अधिकार निष्फल हो जाता है एवम गलत प्रतिनिधि चुने जाने की संभावना बढ़ जाती है।

इस प्रकार की स्थिति में 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का यह स्पष्ट मत है कि भारत की अखंडता, एकता व समरसता को बनाए रखने के लिए पूर्व के समान ही आगामी चुनाव में हमारी विशेष जिम्मेदारी है कि जनता में जन-जागरण के अभियान की 4P रणनीति- Passionate(उत्साही होकर), Prepare to choose(चुनने के लिए तैयार), Proactive(सक्रीय), Positive(सकारात्मक) द्वारा लोगों को सजग, सकारात्मक शासन-तंत्र के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करे और 100% वोटिंग सुनिश्चित करवाएं। इस दिशा में हम निम्नलिखित शपथ लेते है:

'हम भारत के नागरिक यह प्रण लेते है कि हम मताधिकार के बहुमूल्य अधिकार का उपयोग करके सशक्त, सबल और सजग सरकार का चुनाव करेंगे। हम यह भी प्रतिज्ञा लेते है कि हम समाज में जागरण करके ऐसे प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे जो राष्ट्रहित, लोकहित और सनातन मूल्यों को केंद्र में रखकर विकासवादी शासन करेगा।' ■

बस्ते की बोझ बिना भी शिक्षा हासिल कर सकते हैं बच्चे : संदीप जोशी

प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार 2018, जालोर (राजस्थान) के सामाजिक कार्यकर्ता संदीप जोशी को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन, कर्णावती में दिया गया। संदीप को यह पुरस्कार शासकीय विद्यालयों में शिक्षा में नवाचार के सफल सृजन एवं क्रियान्वयन हेतु किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा और सम्मान हेतु दिया गया है। युवा पुरस्कार से सम्मानित संदीप जोशी ने शिक्षा में नवाचार, बस्ता मुक्त विद्यालय, भारत दर्शन गलियारा, कन्या पूजन जैसे मुद्दे पर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के संवाददाता से खुलकर बातचीत की।

अपने कार्यों के बारे में बताते हुए संदीप जोशी ने कहा कि मैं वर्ष 2005 में राजकीय सेवा में आया। मेरा स्वाभाव हमेशा कुछ न कुछ प्रयोग करने का रहा है। विद्यालय में बच्चों के बीच राष्ट्रभक्ति की भावना को जागृत करने के उद्देश्य से मैंने राष्ट्रीय पर्व के दौरान जहां झंडा फहराया जाता था उसके नीचे चारो तरफ गोबर और मिट्टी से भारत का नक्शा बनाकर भारत माता पूजन करना शुरू किया, जो राष्ट्रीय पर्व तक ही सीमित न होकर हर रोज होने लगा, जिस कारण बच्चों को खेल - खेल में भारत के भूगोल के बारे में जानकारी मिल गयी।

बस्तों के बोझ से मुक्त शिक्षा का विकल्प

बस्ते का बोझ बच्चों के लिए बहुत ही कष्टकारी है, इसे कैसे दूर किया जाय इसको लेकर मेरे मन में हमेशा कुछ न कुछ विचार चलते रहते थे। काम करते - करते मेरे मन में एक ख्याल आया, क्यों न पाठ्यक्रम के अनुसार किताब को अलग कर दिया जाय। मान लीजिए हिंदी की पाठ संख्या - दो, जुलाई में पढ़ना है, तो उसे फरवरी तक लेकर क्यों लाना या फिर अंतिम इकाई को मार्च में पढ़ना है तो जुलाई से ही इसे क्यों ढ़ो रहा है? मैंने कुछ नहीं किया। बस ! सबके बाइंडिग को खोल दिया पाठ्यक्रम के अनुसार सभी विषयों को एकीकृत कर स्टेपल कर दिया उसका नाम दिया ज्ञानकोश। बच्चे अब महीने के हिसाब से ज्ञानकोश लेकर आने लगे। इससे काफी फायदा हुआ, साल भर एक ही किताब को रोज - रोज ढ़ोने से मुक्ति मिल गई और किताबों के बोझ तले बच्चों का मेरूदंड झुकने से बच गया। अब शिक्षकों को भी तय समय पर पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ रहा है। यह सुझाव हर किसी को पसंद आया और अन्य विद्यालयों में भी इसे अपनाया गया। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री ने शिक्षक दिवस के मौके पर घोषणा की कि सभी केन्द्रीय विद्यालयों के पाठ्यपुस्तक इसी प्रकार बनाये जायेंगे।

इसी प्रकार मैंने एक अन्य सुझाव दिया कि सप्ताह के अंत शनिवार को बस्ता मुक्त शिक्षा की यानी शनिवार को बच्चे बिना बस्ते के विद्यालय आयें। इसको लेकर हमने विद्यालय के अन्य शिक्षकों से बात की और पाठ्यक्रम के अनुसार हर विषय को कला, संगीत के माध्यम से सिखाने का निर्णय लिया। बच्चों को घर से भारत के नक्शे को देखकर आने कहा। शनिवार को भारत के नक्शे को सामने रखकर बच्चों से पूछना शुरू किया बताओं गंगा नदी किधर है, यमुना किधर, हिमालय कहां है, जयपुर कहां है, मुंबई कहां हैं, चेन्नई कहां हैं? फलस्वरूप बिना बस्ते और तनाव के बच्चे खेल - खेल में आनंददायी शिक्षा प्राप्त कर रहें हैं। श्री जोशी ने बताया कि सरकार को यह सुझाव पसंद आया और सरकार ने सभी केन्द्रीय विद्यालय में बस्ता मुक्त शिक्षा की शुरूआत करने की घोषणा कर दी। वर्तमान में राजस्थान समेत 12 प्रांतो के विद्यालयों में सरकारी प्रयास से शनिवार को बच्चे बिना बस्ते की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

भारत को जानने के लिए भारत दर्शन गलियारा

भारत क्या है? भारत माता की जय क्यों कहें? भारत का गौरवशाली इतिहास क्या है? छात्रों के मन में भारत के प्रति गौरव का भाव विकसित करने, भारत के बारे में जानकारी और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों की तैयारी के लिए उपयोगी हो, इन सभी को ध्यान में रखकर अपने विद्यालय के बरामदे में भारत के बारे में जानकारी दी जिसका नाम दिया 'भारत दर्शन गलियारा'। बरामदे में जो स्तंभ(पिलर) थे उसका नाम दिया ज्ञान स्तंभ और भारत के अतीत की उपलब्धियां, भारत के परिदृश्य और भविष्य के बारे में जानकारी दी। ऐसे लगभग 150 से अधिक तथ्य जो वर्तमान भारत कीं उपलब्धियों के बारे में हैं उसे गलियारे में लगाया है। बच्चे चलते - फिरते भारत से संबंधित सभी जानकारियों को कंठस्थ कर लेते हैं। उसके मन में भारत के प्रति सम्मान का व गौरव का भाव विकसित होता है। इस प्रकार बिना सरकारी योजना के भी राजस्थान के नौ जिलों के लगभग 27 विद्यालयों में शिक्षकों ने अपने प्रयास से 'भारत दर्शन गलियारा' स्थापित किया। चर्चा का विषय बना तो राजस्थान के पूर्व शिक्षा मंत्री ने पूर्व में विधानसभा में घोषणा की कि राजस्थान के 65 हजार विद्यालयों में 'भारत दर्शन गलियारा' बनेगा।

दुराचार को रोकने के लिए बच्चों के मन में बैठाना होगा महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव

निर्भया कांड जैसी घटनाओं ने देश को शर्मसार किया है और आये दिन दुराचार, छेड़खानी की घटनाएं सुनने को मिलती है। उन सब को दूर करने के लिए कानून का एक अपना पक्ष है, कानून अपना काम करेगा। परंतु मुझे लगा कि बचपन से ही बच्चों के मन में एक संस्कार क्यों न स्थापित किया जाये ताकि इन घटनाओं पर रोक लग सके। इस हेतु कन्या पूजन का कार्यक्रम रखा। यह कोई धार्मिक कर्मकांड नहीं था बल्कि मनोवैज्ञानिक तरीके बच्चियों के प्रति सम्मान का भाव बैठाना था। नवरात्रि के नौ दिनों में कन्या पूजन का कार्यक्रम रखा, जिसमें विद्यालय के सभी छात्र, कर्मचारी, शिक्षक समेत स्थानीय ग्रामीणों ने भाग लिया और पूजन किया। देखते ही देखते यह पूरे समाज में फैल गया। पिछले साल बिना किसी सरकारी खर्च के शिक्षकों के व्यक्तिगत प्रयास से राजस्थान के 850 सौ विद्यालयों के लगभग डेढ़ लाख छात्रों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और उसके मन में बालिकाओं के प्रति अच्छा भाव विकसित हुआ। अगर इस तरह के मनोवैज्ञानिक कार्यक्रम देश भर में हुए तो छेड़छाड़ की घटनाओं में कमी आ सकती है, ऐसा मुझे विश्वास है।

यस सर ! की जगह जय हिंद ! बोलते हैं बच्चे।

विद्यालयों में जब बच्चे हाजिरी लगाते थे तो वे यस सर बोलते थे, इसको लेकर मेरे मन में लगता था कि यस सर बोलने से बच्चों को क्या शिक्षा मिल रही है वह तो यस मैन बनने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इसकी जगह पर क्यों न जय हिंद या जय भारत बोलें? इससे उसके मन में लगेगा कि हमें जय भारत बोलना है। भारत की जयजयकार करनी है। देश के लिए कुछ करना है। उसके मन में देशभक्ति की भावना विकसित होगी और आगे चलकर वह प्रखर देशभक्त बनेगा। हमलोगों ने इसे अपने विद्यालय में लागू किया। अनेक शिक्षा मित्रों ने इसे अपनाया। मध्यप्रदेश सरकार ने तो बाकायदा इसके लिए आदेश पारित किये कि विद्यालय में उपस्थिति जय हिंद या जय भारत से होगी। विद्यार्थी परिषद् के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि परिषद एक पारस की तरह है जो लोहे को छूने से सोना बना देता है। उसी प्रकार परिषद् में जाने के बाद व्यक्तित्व में सोने जैसी चमक आ जाती है। ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का जनवरी 2019 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

अभाविप एक परिवर्तनकारी यात्रा - भविष्य की दिशा

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन पर पूरे देश की नजर है, लोगों को परिषद् से काफी अपेक्षाएं हैं। समाज हमारी तरफ आशा भरी नजरों से देख रहा है। छात्रों को भी यह पता है कि विद्यार्थी परिषद् समस्या नहीं अपितु समाधान लेकर आयेगी। हम सभी का दायित्व है, इनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरें। देश की आजादी में छात्रों की महती भूमिका थी। देश के शैक्षणिक परिसरों में ही नहीं, जो विदेश के परिसर में गये उनमें भी स्वाधीनता की भावना थी, सभी ने अपने - अपने स्तर से स्वाधीनता आंदोलन में योगदान देने का काम किया। हम उस छात्र आंदोलन की विरासत हैं जिसका इतिहास गौरवशाली है। आजादी के लिए गांधी जी का मार्ग हो, भगत सिंह का मार्ग हो, सुभाष का मार्ग हो, डॉ. हेडगेवार का मार्ग हो, सभी का ध्येय एक ही था - स्वाधीनता और उन सभी के आंदोलनों में छात्रों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था।

कोई पूछता है कि अभाविप अपना आंदोलन किससे जोड़ता है तो हम कहते हैं कि विद्यार्थी परिषद् मां भारती के उस छात्र आंदोलन की विरासत है जिसने स्वाधीनता आंदोलन में बढ़ - चढ़कर हिस्सा लिया। आजादी के 25 वर्ष भी पूरे नहीं हुए थे कि देश में तानाशाही राज आ गया, यही गुजरात की धरती है जहां (मोरबी) से छात्र आंदोलन की शुरूआत हुई जो बाद में संपूर्ण क्रांति में परिवर्तित हो गया। यही वह छात्र आंदोलन है जिसने देश में पुनः लोकतंत्र की स्थापना की। लोग कहते हैं आजादी में परिषद् की क्या भूमिका थी मैं उससे कहता हूं आजादी क्यों? उससे भी हजार वर्ष पीछे जाकर देखो, देश के संस्कृति की रक्षा किसने की। आजादी का कौन ऐसा आंदोलन था जिसमें छात्रों की सहभागिता नहीं थी। 1947 में देश के बंटवारे के समय कौन कहां और किसके साथ खड़ा था? उस समय तो आंदोलन करने वाले अन्य छात्र संगठन वाले को तो सांप सूंघ गई थी। हमारे देश के छात्र समझदार हैं, यही कारण है कि उन्होंने राष्ट्रीयता का विचार रखने वाले को साथ दिया। समय के साथ परिषद् ने अपने आपको स्थापित किया है।

छात्रों को अगर किसी ने दिशा देने का काम किया तो वह है अभाविप। हमने छात्रशक्ति - राष्ट्रशक्ति, छात्र कल का नहीं - आज का नागरिक है केवल कहा नहीं बल्कि उसको मूर्त रूप भी दिया क्योंकि यह हमारे लिए निष्ठा का प्रश्न था। राष्ट्र केवल एक भौगोलिक संरचना नहीं होता बल्कि एक जीता - जागता समाज है जो संवदनाओं से भरा हुआ है। कश्मीरी पंडितों को जब घाटी से भगाया गया, उनकी बहू - बेटियों की अस्मत लूटी गई। उनकी समस्या का अनुभव देश कर सके, इसके लिए अभाविप ने देश भर में आंदोलन किये और लोगों को कश्मीर की वास्तविक हालातों से परिचित करवाया। पूर्वोत्तर में घुसपैठ

की समस्या पर अभाविप ने मुखर होकर विरोध किया और इसे जन भावनाओं के साथ जोड़ा। विद्यार्थी परिषद् के लिए कोई मुद्दा राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं अपितु कर्तव्य का विषय है। भू - मंडलीकरण के दौरान लोगों का पूर्वानुमान था कि छात्र करियरिस्ट एवं स्वार्थी हो जायेगा। युवाओं को जब भू - मंडलीकरण पर भ्रमित करने का प्रयास किया गया हमें गर्व होना चाहिए कि उस समय भी अभाविप ने भारत माता की जय, वंदे मातरम के जयघोष से युवाओं में राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत करने का काम किया। फलतः आज हरेक युवा में देश के लिए कुछ करने की ललक पैदा हुई है। लोगों ने एक समय कहना शुरू कर दिया कि भारत ब्रेन ड्रेन की समस्या से ग्रसित है, भारत की प्रतिभा पलायन कर विदेशों में नौकरी कर रही है, यहां तो दिमाग नहीं बचा है। आज दुनिया भर में गये हुए लोग पुनः वापस भारत लौट रहे हैं और राष्ट्र का उत्थान कर रहे हैं। यह ऐसे ही नहीं हुआ। इसके लिए अभाविप ने सतत प्रयास किया, संवाद स्थापित किया परिणामस्वरूप आज लोग वापस अपने देश लौट रहे हैं और राष्ट्र के विकास में सहभागी बन रहे हैं। 1966 में पूर्वोत्तर के लोगों से संवाद स्थापित करने लिए अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन यात्रा की शुरूआत की जिसमें 20 - 30 पूर्वोत्तर के छात्र यहां आये फिर यहां से 20 - 30 छात्र पूर्वोत्तर गये और वहां की जीवनशैली का अनुभव किया और यह प्रक्रिया सतत रूप से वर्धमान है, परिणास्वरूप पूर्वोत्तर में अभाविप न केवल बड़े संगठन के रूप में स्थापित हुआ बल्कि वहां के सभी संगठनों को एकजुट भी किया। अब वहां के छात्र संगठन हिंसा का मार्ग छोड़ चुके हैं, अलगाववाद लगभग खत्म हो चुका है।

हम ये नहीं कहते कि सारे परिवर्तन हमने किये हैं लेकिन यह सच है कि इसके लिए माहौल विद्यार्थी परिषद ने तैयार किया है। बहुत दिनों तक लोगों को नेशनलिज्म/पेट्रोटियरिज्म पर दिग्भ्रमित करके रखा लेकिन अभाविप के प्रयास के कारण राष्ट्रीयता पर एक नई बहस शुरू हुई है और बुद्धिजीवी बेनकाब हो रहे हैं। हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। फेमनिज्म पर अरसे से चर्चा हो रही थी, इस पर राजनीतिक रोटियां सेंकने के भी प्रयास हुए। परिषद् ने इस मामले को गंभीरता से लिया और कहा नारी अबला नहीं सबला है। छात्राओं को आत्मनिर्भर व निडर बनाने के लिए अभाविप के द्वारा मिशन साहसी अभियान चलाया गया। मिशन साहसी की शुरूआत मुंबई से हुई और पूरे देश भर में फैल गई। मिशन साहसी के तहत देश भर की लगभग पांच लाख छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाये गये। अब छात्राएं निर्भर नहीं निडर होगी। तथाकथित फेमनिज्म को हमने बता दिया है कि यहां पर फेमिनिज्म नहीं चलेगा बल्कि परिवार की तरह आपसी सम्मान से होगा और उन सबका माध्यम है मिशन साहसी। परिषद् के कार्यकर्ता सोशल मीडिया के रक्षक हैं और इसका दुरूपयोग नहीं होने देंगे।

होगी जरूर फूंक की भी कुछ कीमत, वरना बासुरी तो सस्ती मिलती है

लोग पूछते हैं कि छात्र आंदोलन से देश पर क्या फर्क पड़ेगा तो उनके लिए मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि होगी जरूर फूंक की भी कुछ कीमत, वरना बासुरी तो सस्ती मिलती है। हम केवल परिस्थितियों का रोना नहीं रोते हैं बल्कि उसको चुनौती के रूप में लेकर समाधान भी करते हैं। वर्तमान में देश को परिवर्तनकारी सोच की जरूरत है। हर क्षेत्र में परिवर्तनकारी योजना चाहिए और परिवर्तनकारी शक्ति का नाम अभाविप है। देश में बहुत सारे लोग झूठी - मूठी लीडरशिप करते हैं उसकी छुट्टी करने की जरूरत है। हर क्षेत्र में एक नई लीडरशिप खड़ी करने की जरूरत है। परिषद् की जब स्थापना हुई तब कांग्रेस का भी छात्र संगठन था लेकिन जब सत्ता को अपने ही छात्र संगठन का विरोध झेलना पड़ा तो 1948 में उसका विलय कांग्रेस में कर दिया गया। पुनः 20 वर्ष बाद कोई छात्र संगठन बनाया गया।

प्रा. यशवंतराव केलकर ने कहा था कि परिषद् आने वाले सभी क्षेत्रों में कार्य करे और उसका नेतृत्व करे। आज परिषद् का हरेक क्षेत्र में अपना आयाम है, हमने सकारात्मक नेटवर्क तैयार किया है। कला, सेवा, कृषि, तकनीक जैसे विभिन्न क्षेत्रों में काम हो रहा है। प्रा. केलकर की जो सोच थी परिषद् ने उसे साकार किया है और लगभग सभी क्षेत्रों में अपना नेतृत्व देने का काम किया है। विभिन्न आयामों के माध्यम से परिवर्तन की एक रूपरेखा परिषद् ने तैयार की है। कृषि के क्षेत्र में एग्रीविजन, मेडिकल के क्षेत्र में मेडिविजन, आयुर्वेद के क्षेत्र में जिज्ञासा, कला के क्षेत्र में राष्ट्रीय कला मंच, फार्मा के क्षेत्र में फार्माविजन जैसे आयामों के माध्यम से नेतृत्व तैयार किया जा रहा है। शोध का नया आयाम भी प्रारंभ हो गया है। एक परिवर्तन का ही सोच, परिवर्तनकारी नेतृत्व तैयार करना राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का अगला लक्ष्य था जिसे पूरा करने का काम किया है।

आने वाले दस वर्षों में लगभग सभी क्षेत्रों ज्यूडिशरी रिफॉर्म, पुलिस रिफॉर्म, एनजीओ कैसे होना चाहिए, पर्यावरण कैसा हो, आधुनिकता के साथ - साथ प्रकृति के साथ सदभाव कैसे स्थापित करें, यानी Nature friendly कैसे बने इस पर और अधिक तेज गति से काम होगा। हमलोगों ने अपने आयामों के माध्यम से परिवर्तन की रूपरेखा को तैयार किया है। आने वाले एक दशक में पूर्णरूपेण इसे प्रयोग में लाना है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर की एक बहुत प्रसिद्ध किताब है नेशनलिज्म। नेशनलिज्म किताब के नीचे एक उपशीर्षक है जिसमें लिखा गया है कि यूरोप का नेशनलिज्म ऐसा है जिसके कारण प्रताड़ित लोग दुनिया के बहुत सारे हिस्सों में रहते हैं। उस किताब में एक और महत्वपूर्ण वाक्य लिखा हुआ है जिसे आज के युवाओं को जानना जरूरी है, उसमें लिखा हुआ कि In the so called free countries the majority of the people are not free they are driven by the minority to goal which is not even known to them.

कुछ लोग सत्ता के गलियारों व चुनिंदा विश्वविद्यालय के परिसरों में बैठकर देश का भविष्य तय करना चाहते हैं जो कभी नहीं हो सकता है। अभाविप का मानना है कि राष्ट्रीय विमर्श से ही राष्ट्र की दिशा तय हो सकती है। देश के परिप्रेक्ष्य में मेरा यही कहना है कि देश नये वकील को चाहता है, नये जज चाहते हैं। आतंकवादियों के लिए रात के 12 बजे खोलने वाले न्यायाधीश की जरूरत नहीं बल्कि आम आदमी के लिए 24 घंटे न्याय के दरवाजे खोलने वाले न्यायाधीश की जरूरत है। परिषद् के कार्यकर्ता इतिहास में नहीं जीते बल्कि इतिहास से सीखते हैं और नया इतिहास बनाते हैं। जो देश को जानता भी नहीं, देश की भाषा नहीं जानता हो, देश की मिट्टी को नहीं जानता हो वह देश कैसे चला सकता। जिसने देश को जिया है, जो देश की संस्कृति से परिचित है वही देश की बात कर पायेगा, वहीं देश को चला भी सकता है। देश के सभी क्षेत्रों मे सकारात्मक बदलाव लाने की जरूरत है। हमारे देश में कुछ लोग Neutral रहना चाहते हैं, कुछ NOTA की बात करते हैं , कुछ Non - Active यानी निष्क्रिय हैं और कुछ लोग Negative हो चुके हैं उनके चार N के जवाब में अभाविप ने चार P - Passionate यानी Neutral होने की जरूरत नहीं है उत्साही बनो, दूसरा Prepare to choose or replace, या तो चुनो या फिर उसको हटाओ NOTAकी जरूरत नहीं है। हमलोग Proactive हैं, Non-active मतलब निष्क्रिय नहीं रह सकते और Negative नहीं एक सकारात्मक Positive परिवर्तन के लिए हमलोग काम करते हैं। इसलिए जहां चार N - Neutral, NOTA, Non - active, Negative हैं वहीं पर विद्यार्थी परिषद् P - Passinate, Prepare to choose or replace, Proactive और Positive पर काम कर रही है।

रविन्द्र नाथ टैगोर ने पाश्चात्य के बारे में बहुत ही अच्छा कहा है कि "पाश्चात्य की संस्थाएं देखने में वैज्ञानिक ढ़ांचे की तरह लगती है लेकिन अंत में समझ में आता है कि वह मानवहित में नहीं है।"

हमारा विचार जो होगा वह प्रायोगिक होगा, रिफाइन्ड होगा। पिछले सात - आठ सौ वर्षों में बहुत कुछ हुआ है, पिछले सत्तर वर्षों में काफी कुछ हुआ है हमें उसे बदलने की जरूरत है। परिश्रम से ही परिवर्तन संभव है। किसी ने ठीक ही कहा कि परिवर्तन एक सुबह की तरह होता है जिसे मांगने पर नहीं जागने पर प्राप्त किया जा सकता है। अलख जगाने का काम लगातार हमलोग कर रहे हैं, बहुत सारे कार्य हमलोग करते हैं। भारत में कोई भी चीज अंत नहीं है स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि वेदों और उपनिषदों का कोई वाक्य अंतिम नहीं है लेकिन विदेशों में अंतिम वाक्य है। दुनिया में कई ऐसी पुस्तकें हैं जो खुले विचार की नहीं हैं उनके मुताबिक उसमें लिखे बात ही अंतिम ध्येय वाक्य है। इसलिए विवेकानंद कहा करते थे उपनिषद में आखिरी श्लोक नहीं। आजकल एक नये प्रकार के संबंध की चर्चा हो रही है लेकिन विद्यार्थी परिषद् एक नये संबंध की बात करती है, परिषद कहती है कि आपका इस परिवार, देश, मिट्टी, आसमान से रिश्ता क्या होगा? बहुत सारे आंदोलन को हमने छेड़ा है। आज परिषद् का ढ़ांचा देशव्यापी हुआ है, इसका कारण परिषद के प्रति छात्रों का विश्वास है। हमारे देश में कई ऐसे कथानक हैं जिनका देश के प्रति कोई भूमिका नहीं रहा है फिर भी उसे हीरो की तरह दर्शाया है। हमारा कर्तव्य है कि वास्तविक कथानक को सामने लाकर उसको समाज के बीच स्थापित करना है। ये वास्तव में परिवर्तन की बात है, आपातकाल का हमने सफल विरोध किया था, कश्मीरी घुसपैठ पर हम लड़े थे, छात्रों को न्याय मिले, देश की सेवा करने के लिए कार्यकर्ताओं को तैयार करना ऐसा परिषद् का संकल्प है। अनुभूति के माध्यम से हमने समाज के अंतिम लोगों तक पहुंचने का काम किया है। कथा की शुरूआत भले ही किसी ने की है लेकिन अंत आपके हाथों होना चाहिए। अभाविप इसे करेगी। ■

ABVP 64th National Conference Resolution No. 3

Supreme Court must be Cautions in the matters of public faith

Post- independence, the makers of our Constitution acknowledged the existences of public faith and by internalising the comprehensive general will of the people constructed institutions of equilibrium and stability. In a democratic system, it's the people who are the soul of the institutions. If that vanishes, the acceptability of the institutions depreciates. In comparison to the Nations that won their independence around the same time as we did; our system is the best and the most effective. It is mainly because our constitution makers pre-decided the boundaries, control, powers, and responsibilities of these institutions. In the last 70 years, these institutions have worked responsibly in accordance to the rights, aspirations, needs and faith of every individual of the republic. As a result, these institutions have earned deepest sense of respect and trust among the people.

In the definitive opinion of the 64th National Conference of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad, the decisions and comments of the Hon'ble Supreme Court on certain issues are contradictory to the public sentiment. It is highly worrisome that such decisions and comments are leading to social disharmony and questioning of the judicial processes by the masses.

Hon'ble Supreme Court's judicial over-activism, over delay, Unnecessary interference and extremely arid approach in some cases arid approach in some cases raises questions on social structures and their impartiality. In the issue of Ram-Mandir at Ayodhya, the Supreme Court appears to follow such behaviour. Ram is at the core of the faith of the nation. Therefore, in the long pending Ram Mandir dispute, the Supreme Court's decision to post-pone the hearing for three months, after showing intention to hold day-to-day hearing of the case, validly permits people to raise daunting questions against the court.

Moreover, the Supreme Court's comment that its priority lies elsewhere is an expression of indifference to the people's unblinking faith in Ram and centuries of determined movement for Ram Mandir. When on the other side, the Supreme Court is seen accepting to act at lightening alacrity for the bail petitions of 5-6 Urban Maoist conspiring assassination of the Prime Minister at the pretence of saving their human rights or in the cases of appeals by the terrorists, it is natural for people to form opinions about the biased parameters governing the honourable court's understanding of its priorities. The 64th National Conference of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad makes the humble unequivocal appeal to the honourable Supreme Court to hold hearings of the Ram Mandir case on daily basis and ensure the construction of the grand temple at the site of Ram Janmabhoomi.

The Supreme Court's judgement, in Sabrimala temple entry case of allowing women aged 10 to 50 in the temple, has been made on the basis of the petition filed by a petitioner who is not a follower of the concerned faith. The Court's decision is permeated with ignorance of the faith and convention associated with Swami Ayyappa and the spirit of the people of Kerala and the whole Bharat as well. The judgement rests on a very parochial understanding of the principles of equality. This decision has been protested against by the women of Kerala in peaceful massdemonstration.

The 64th National Conference of ABVP renders the highest order of salutations to the steadfastness of the women of Kerala, and demands that the honourable Supreme Court shall do justice without further delay when it hears the review petition in the Sabrimala case.

In the well thought of opinion of the 64th National Conference of ABVP, the Supreme Court must keep in mind the eternity of the conventions in cases related to the question of faith. If such conventions are not detrimental to or exploitative of any particular section(s) of the society, the judgements of the Honourable court must respect the religious freedom of the people in order to maintain the unshakable trust of the masses in the august institution of judiciary. Along with this, the 64th National Conference of ABVP would urge the intellectuals, activists and the common people to analyse the judgements on issues related to faith, with utmost sincerity and deference to the Supreme Court. ■

विद्यार्थी परिषद् के प्रशिक्षण की बदौलत मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया : उपराष्ट्रपति नायडू

मैं बहुत भावुक हूं, 50 साल पहले एक सामान्य कार्यकर्ता के तौर पर अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में शामिल हुआ था। आज मुख्य अतिथि के रूप में आपके सामने उपस्थित हूं। युवा पुरस्कार समारोह में शामिल होकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। यह पुरस्कार ऐसे व्यक्तित्व की स्मृति में दिया जा रहा है जिनका ध्येय ही युवा शक्ति को सही दिशा देना था। उनके संकल्प के कारण ही आज अभाविप सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में बनकर उभरा है। मुझे संतोष है कि अब तक युवा पुरस्कार के लिए कृषि, तकनीक, शिक्षा इत्यादि से जुड़े लोगो को प्रदान किया गया। पुरस्कार एक भारतीय परंपरा है जो प्रतिभावान लोगों को पुरस्कृत कर उसे प्रोत्साहित करती है ताकि आने वाली पीढ़ी उससे प्रेरित होकर राष्ट्र एवं समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान कर सके। मुझे विश्वास है कि यहां आये सभी कार्यकर्ता इससे प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनेंगे। युवा पुरस्कार प्राप्तकर्ता संदीप जोशी को मैं शुभकामना देता हूं। ये बातें कर्णावती (अहमदाबाद) में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के तीसरे दिन 29 दिसंबर 2018 को युवा पुरस्कार समारोह के दौरान भारत के उपराष्ट्रपति एम. वैंकेया नायडू ने कही। वे इस समारोह के मुख्य अतिथि थे।

उपराष्ट्रपति ने कार्यकर्ताओं से कहा कि मित्रों मैं विद्यार्थी परिषद् की कार्यपद्धति से परिचित हूं, चूंकि मैं भी लंबे समय तक परिषद् का कार्यकर्ता रहा हूं। मुझे पता चला है कि अभाविप ने छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'मिशन साहसी' अभियान चलाया है, आशा है कि परिषद ऐसे ही आपदा राहत के लिए अपने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करेगी। अभाविप ने SEILके माध्यम से पूर्वोत्तर के छात्रों को शेष भारत से जोड़ने का काम किया है, जो प्रशंसनीय है। युवा देश का भविष्य है, अगर आप अपनी ऊर्जा को रचनात्मक रूप से संयोजित करेंगे तो राष्ट्र का उत्थान होगा। एक समय में भारत विश्व गुरू था, इस बात को फाहियान जैसे यात्रियों ने भी स्वीकार किया था। तक्षशिला, नालंदा में आकर विश्वभर के विद्यार्थी पढ़ते थे। चरक, धनवंतरी, चाणक्य, भास्कराचार्य आदि का उदाहरण देते हुए उन्होंने कार्यकर्ताओं को भारत के गौरव से परिचित करवाया। उन्होंने कहा कि साझी संस्कृति हिन्दुस्तान की विरासत है, कोई भी देश अपनी संस्कृति को भुलाकर विकास नहीं कर सकता। भारत की विरासत समृद्ध है, हर भारतीय को इस पर गर्व होना चाहिए। उपराष्ट्रपति के तौर पर विश्व के कई देशों में गया तो वहां देखा कि हर जगह भारत के विकास की चर्चा हो रही है। अपनी प्रतिभा की बदौलत हमारे देश के युवा

नामचीन कंपनियों के प्रमुख पदों पर आसीन है। ये लोग अपने सकारात्मक विचार के साथ वहां तक पहुंचे। भारत विश्व का सबसे बड़ा गणतांत्रिक देश है। यहां विविध पंथ के लोग एक साथ निवास करते हैं, विविधता में एकता भारत की विशेषता है। सर्वधर्म सदभावना भारतीय संस्कृति की अवधारणा है। शिक्षा केवल रोजगार के लिए नहीं होनी चाहिए, शिक्षा का पहला उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करना है। उन्होंने कहा कि निर्भया कांड बेहद ही शर्मनाक और दुखदायी है। राजनीतिक प्रयास, बिल या कानून से निर्भया जैसी घटना नहीं रूक सकती, इसको रोकने के लिए लोगों की मानसिकता बदलनी होगी। परिवार पद्धति हमारी शक्ति है, प्राचीन काल से ही हमारे देश में महिलाओं का विशिष्ट स्थान रहा है। लगभग सभी नदियों के नाम महिलाओं के नाम पर है। ज्ञान की देवी मां सरस्वती, धन की देवी मां लक्ष्मी और शक्ति की देवी मां दुर्गा मानी जाती है। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारी संस्कृति में महिलाओं का क्या स्थान है? संस्कृति जीवन जीने का आधार है, इससे कटकर आप आगे नहीं बढ़ सकते।

श्री नायडु ने कार्यकर्ताओं से कहा कि आप राष्ट्र की सबसे बड़ी संपदा है, आपके योगदान के बिना यह राष्ट्र कभी उन्नति के शिखर पर विराजमान नहीं हो सकता है। मैं आंध्र प्रदेश के ग्रामीण इलाके से आता हूं, बचपन में तीन किलोमीटर पैदल चलकर विद्यालय पढ़ने जाता था। छात्र जीवन में ही मैं विद्यार्थी परिषद् के संपर्क में आया। परिषद् के प्रशिक्षण के बदौलत इस मुकाम तक पहुंच पाया। अभाविप ने देश को दिशा देने का काम किया है। आपलोगों पर बहुत बड़ा दायित्व है, संभलकर चलें। आप सादे कपड़े की तरह है जिस पर छोटा दाग भी दिखता है, रंगीन यानी गंदे लोगों पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। आपका व्यवहार आपके विचारों को दर्शाता है, आपका व्यवहार ऐसा होना चाहिए लोग देखकर कह दे कि यह जरूर विद्यार्थी परिषद् का कार्यकर्ता होगा। उन्होंने कहा कि भाषा और भावना एक साथ चलती है। मातृभाषा हमारी आंख है और अन्य भाषा चश्मे की तरह है। अपनी मातृभाषा और मातृभूमि को कभी नहीं भूलना चाहिए। अलग भाषा – अलग वेश फिर अपना सुंदर देश। आप जीवन में अपने लक्ष्य को पाने के लिए भागिये, दौड़िये और लक्ष्य मिल जाये तो पुनः अपनी मातृभूमि में वापस आ जाइये। अभाविप ही ऐसा संगठन है जहां पर शिक्षक और छात्र एक साथ काम करते हैं। ■

आत्मीयता और मिठास के प्रतीक थे यशवंतराव केलकर : ओ. पी. कोहली

गुजरात के राज्यपाल ओ. पी. कोहली ने कहा कि सौभाग्यशाली हूं कि अभाविप के शिल्पकार कहे जाने वाले प्रा. यशवंतराव केलकर के साथ परिषद् में काम करने का मौका मिला। हमारे समय संगठन में तीन नेतृत्वकर्ता थे - यशवंतराव केलकर, बाल आप्टे और मदनदास देवी, जिसमें यशवंतराव बहुत ही नपे - तुले बोलते थे। कभी - कभी बैठक में मात्र दो - तीन शब्द ही बोलते थे लेकिन बैठक के उपरांत वही निर्णय होता था जो वे मुस्कुराकर दो - तीन शब्द बोले होते थे। मेरा भी मानना है कि ज्यादा बोलना ठीक नहीं, कम ही बोलें लेकिन वह सार्थक हो। श्री कोहली ने कहा अपने को पीछे रखकर ही कार्यकर्ता निर्माण हो सकता है। उन्होंने कहा कि प्रा. केलकर आत्मीयता, मिठास और संवेदना के प्रतीक थे। वे कभी भी अपने बारे में या अपने परिवार के बारे में नहीं सोचते थे। उनका जीवन ही कार्यकर्ताओं को गढ़ने में बीत गया। मुझे आज खुशी हो रही है कि आज ऐसे व्यक्ति को सम्मान मिल रहा है जो संवेदनापूर्वक बच्चों को बढ़ाते हैं, संदीप जोशी भले ही यशवंतराव से नहीं मिले हों लेकिन उनका विचार उनमें विद्यमान है।

युवा पुरस्कार प्राप्तकर्ता संदीप जोशी ने कहा कि सपने में भी नहीं सोचा था कभी विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन के मंच पर बैठ पाऊंगा। मैं तो पंडाल के बाहर चप्पल को व्यवस्थित करने वाला कार्यकर्ता हूं। आज इस पुरस्कार को पाकर अभिभूत हूं, मैंने कभी यशवंतराव केलकर जी को देखा तो नहीं लेकिन उन्हें पढ़ा जरूर हूं। परिषद् से जो संस्कार मिले उसे ही अपने जीवन में उतारने का कोशिश कर रहा हूं। ■

Celebrating Diversity

SEIL Tour 2019 has many delegates who have come out of their states for the first time in life, but one can be assured that by the time they reach back to their homes, they would have realised that the whole country is their home.

| Shriniwas |

At the very moment of its foundation, precisely on July 9, 1949, the Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad (ABVP) was determined with conviction that for restoring the national pride in the coming generations, the students must be introduced to Bharatiyata i.e. the national ethos and the real identity of the nation. Since then, the ABVP has tirelessly worked in this direction with the spirit of 'nation first'.

ABVP was established at time when student organisations in the country were being actively discouraged by the government and the established political parties. Then the mainstream leaders would openly say "students' power is nuisance power". The arrival of the ABVP as a responsible and service-oriented organisation brought changes in the popularly held views. The ABVP pointed out that it is entirely wrong to see a student only as a citizen of future, but a student must be seen as a citizen of today. The ABVP, through its conduct, proved that "students' power is nation's power". To generate the feeling of responsibility as a citizen of the country and love for the nation, ABVP organises various creative programmes. The programmes are designed in accordance to our eternal Sanatan ideas focusing on the 'unity' among all the 'diversities' of the nation.

The ABVP works on the assumption that a student is today's citizen. This view automatically fills every student in our organisation with a sense of responsibility and awareness. ABVP believes that common students would only come to realise that this whole country in all its length and breadth is their own home if they see it themselves through travel. As we all know, the seven sister states in the North-East, which are home to many ancient tribes are not just rich in natural resources but they are located in a strategically important regions sharing borders with many countries. First, the British rule of two centuries and then the negligence of Central Government for few decades reduced the contacts between North-East and rest of India. The creation of East-Pakistan (now Bangladesh) in 1947, left a very narrow stretch of land geographically connecting the two parts of the country. Taking advantage of the lack in connection and cultural dialogues, certain ill-motivated and anti-national forces got activated in the region of North-East. They started producing destructive and misleading myths.

The ABVP realised the possible fallouts of the lack of integration in North-East as early as 1965. In that year, senior functionaries of the ABVP travelled to North-East and stayed there for a while to understand the culture and specialties of the region. Understanding the geographical and social significance of North-East, they internalised the culture and aesthetic sense of the Ishan (Sanskrit word for North-East, which is considered to be the most divine of all the directions). They pondered upon ways to increase the contacts between the North-Eastern region of India and the rest of India. After having visited the North-East, they were already convinced that the development of India is not possible unless the North-East develops. They could also see that the integrity, sovereignty and the inherent oneness of the nation can be further consolidated only through an increase in the

contacts, dialogues and exchanges among the different regions of the enormously vast country. For such dialogues and exchanges, the common people in the society must be made aware and awakened. To achieve this awareness of common citizenry, the ABVP decided to count in the contributions of the students. We started Students Experience in Inter-State Living (SEIL) in 1966 as a journey to rediscover and realise that our roots which run deep into the Indian soil.

In 1966, which was our first experiment, we invited 17 students from North-East to Mumbai and arranged for their studies. We called this venture 'My Home India'. Our slogan was- 'My India, My Home, My Country, My Home'. Our experiment got great reception and the students showed great results. We were encouraged to upgrade the scale. Thus, the SEIL came into being. Through SEIL, for over last 50 years, we are consistently providing platform for exchange of culture and emotions to the students. In this journey we created thousands of SEIL alumni who are working for national integration in the North-East or some other parts of the country. This year, 2019, the SEIL tour is thematically named as 'Bharat Gaurav Yatra', and it is taking place from January 4 to 26. In three different batches of 30 each, the students belonging to North-East will travel across the country. One should not misunderstand SEIL tour as a formal or professional tour. It is marked with an organised informality, which is focused on comingling in order to discover the threads which bind us together. Therefore, the students travelling as SEIL delegates would not stay in the hotels, but they would stay with the common families. So that the actual exchange takes place. The host families and the delegates both get to know about each other's culture, customs, lifestyles, food, music and language etc. The families are always extremely happy to host North-East students. Though the SEIL tour happens every year, yet we see a competition among the families to host more and more delegates. We see this as a success of SEIL.

The SEIL delegates go through a great change during the tour. They undergo rich experiences. They learn a lot with their growing interactions with the host families. They become aware of the shared bonds and national ethos. They get to meet inspirational figures of current generation and they also do media interactions. All these factors help them in growing in confidence. Not just that they develop into an empowered individual, but they also take up the mission of national awakening in which ever field they venture into in their life. SEIL has played a great role in providing a leadership in North-East which has full realisation of the historical, cultural and emotional bonds of the region with rest of India.

SEIL tour 2019 has many delegates who have come out of their own state for the first time in life, but one can be assured that when they reach back to their homes by that time they would have realised that the whole country is their home. SEIL chapter of ABVP has touched the life of the people in North-East by bringing generations of the students to the realisation of the fact that My India is My Home only by ensuring exchanges through travel. We believe that like this year, every year will see students coming as SEIL delegates to understand the real identity of this great nation, to understand the element of unity in the apparent diversity, and to spread the love for Bharat. May SEIL be an endless series!

We speak different languages We follow different sects But, these differences are meaningless When it comes to the respect for the country We are One! ■

(The writer is national joint organising secretary of ABVP)

ABVP 64th National Conference Resolution No. 4

Need of Eradicating Maoist Propaganda in Academia

An Education System reflects and strengthens social, cultural, moral and national values. Therefore, it has to be based on true historical facts to imbibe in the youth the sense of honor and dignity for the culture, values and history of Bharat. However, in the name of freedom of speech and expression, the integrity, dignity, culture and values are repeatedly targeted by Urban Maoists.

These Urban Maoist are not the Maoists who have been fighting for armed revolution in jungles. These are the people who are very much around us, providing intellectual strength to this fake idea of revolution. They work in the guise of so-called intellectuals, academicians, artists and civil society activists in their NGO's. The strategy of Urban Maoists is to use the resources of the state against the state. This invisible enemy is getting exposed in antinational activities time and again. G.N. Saibaba former Professor of English at Ramlal Collage of Delhi University is serving the sentence under various sections of I.P.C and Unlawful Activities (Prevention) Act. His Quote was 'Naxalism is the only way and denounce the Democratic Government set up', which shows their conspiracy against their democracy. Further the arrests of five persons Varavara Rao, Sudha Bhardwaj, Gautam Navlakha, Vernon Gonsalves and Arun Ferreria in connection with Koregaon-Bhima Riots in January 2018, is eye opener for all those who used to term these Urban Maoists as Intellectual Opposers of Policies. Inspitte of this, the accused varavara Roa's poem is still a poet of syllabus at BHU which should be removed immediately.

The Urban Maoist Professors have the history of presenting the country in bad light, they are known to present distorted version of various subjects in various seminars and academic platform to create unrest in society. Sociology professor in the Delhi University Nandini Sunder's controversial book 'The Burning Forest: India's War in Bastar' has been removed from the University's syllabus. Romila Thapar, former Professor, CHS, JNU has written that beef eating was practiced in ancient times which was later deleted from the syllabus. Late Professor Bipan Chandra had shamefully termed Shahid Bhagat Singh as 'Revolutionary Terrorist' in his book in 'India's struggle for Independence' which was later banned. Kancha Ilaiah has written controversial contents in political science books. The books written and also introduced by these Urban Maoist in curriculum aim to create the rift among the various sections of the society.

In the name of culture of academic debate, the books like 'Subalterns and Sovereigns: An Anthropological History of Bastar', 'Against Ecological Romanticism' etc. have been introduced in the syllabus which glorified naxalism and legitimized religious conversions, it is really an issue of concern for national integration. The lessons like 'Three Hundred Ramayanas' in B.A history curriculum was removed in 2012 when teacher opposed the same for hurting religious sentiments.

These Urban Maoists question the integrity of their own nation by stating 'India is illegally occupying Kashmir'. They spread hatred against their own armed forces in public meetings.

These Urban Maoists are now conspiring by propounding new concocted theories in the name of Dr Babasaheb Ambedkar, which has no historical and legal backing. These all instances undoubtedly prove that the Urban Maoists have always tried to weaken the nation's culture and values. Further the destruction of age-old ancient traditions, culture and the harmony

that unified the Nation as a whole, has always been their hidden agenda.

This National Executive Council of ABVP demands that books and articles written by all such Urban Maoists should be removed from the academics and they should be debarred from delivering lectures as faculty, in all the educational and training institutes. In the garb of intellectuality, the plot to assassinate PM and spreading insurgency is the real face of Urban Maoists. The filing of petition by historian Romila Thapar and others in support of those who have been booked under Unlawful Actives (Prevention) Act, not only shows their proximity but also the nexus which is required to be exposed.

ABVP demands that not only the accused but all those who provide support supplies, technologies, expertise, information and logistics support to Urban Maoists should be booked and strong legal action should be taken against them. ABVP is of the firm view that, the time has come to unmask the real intent of Urban Maoists and to protect the students and youth from their evil conspiracies.

The National Executive Council of ABVP is of the opinion that all the syllabus devised by the Urban Maoists should be revised to depict correct history and cultural values of Bharat.

Unless the curriculum represents the culture, history, needs and aspirations of the nation, the nation cannot progress. The books and chapters should be introduced in the light of fostering national integrity, promoting sound moral and religious values and respect for nation's rich culture. ■

संकल्प

महिला सम्मान हमारा स्वाभिमान

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' और 'मातृदेवो भवः' भारतीय संस्कृति का मूल है। भारतीय संस्कृति में गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा, सीता, शबरी, रानी दुर्गावती, अहिल्याबाई,जीजाबाई, सावित्रीबाई तथा रानी मां गाइदिन्ल्यू इत्यादि ऐसे आदर्श हैं जिन्होंने शिक्षा के साथ ही युद्ध भूमि में भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है । भारत को विश्वगुरू के पद पर आसीन करने में इस मातृशक्ति श्रृंखला का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

काल परिवर्तन के साथ ही बाह्य आक्रांताओं के आगमन , उनके शासन एवं हमारी आंतरिक सामाजिक – राजकीय शिथिलता से समाज में कुप्रथाओं का प्रवेश हुआ । आज भारतीय समाज पुनः अपने मूल रूप में स्थापित होने की ओर अग्रसर है । आज महिलाएं समाज जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं । तकनीकी क्षेत्र, अंतरिक्ष विज्ञान, खेल, सेना, राजनीति, चिकित्सा आदि सभी स्थानों पर महिलाएं स्वयं की शक्ति को प्रदर्शित कर रही हैं । आज एक ओर जहां महिलाएं आगे बढ़ रही हैं वहीं दूसरी ओर कन्या भ्रूण हत्या, दहेज कुप्रथा, घरेलु हिंसास शैक्षणिक संस्थानों में छेड़खानी आदि स्वस्थ समाज के लिए चुनौती बन रहा रहा है । इन कुप्रथाओं एवं कुप्रवृतियों का समूल विनाश महिला सम्मान के द्वारा ही संभव हो सकता है । विद्यार्थी परिषद् लगातार महिला समानता के विषयों में सक्रियता के साथ कार्य करता रहेगा । अतः अभाविप के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में देश के युवाओं को आह्वान करती है कि आइये हम सब यह संकल्प लें कि –

हम महिलाओं की राष्ट्रजीवन के सभी क्षेत्रों की निर्णय प्रक्रिया में पूर्ण अवसर एवं उनकी सहभागिता बढ़ाने के लिए तत्पर रहेंगें । महिलाओं की शक्ति पर निसंदेह सम्मान दायित्व देंगे । घर शैक्षणिक संस्थानों एवं कार्य स्थल आदि सभी स्थानों पर हम महिला सम्मान के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे । महिलाओं में आत्मविश्वास जागृत कर उन्हें भय मुक्त बनाने हेतु 'मिशन साहसी' जैसे अभियानों का सतत आयोजित करते रहेंगे । दहेज कुप्रथा, बाल विवाह तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों को समाप्त करने हेतु स्वयं उनका बहिष्कार कर महिलाओं को पूर्ण सम्मान देंगे । अपने शिक्षण संस्थानों तथा अपने परिसरों को महिला सम्मान के द्वारा इस योग्य बनायेंगे कि वह समाज में एक आदर्श रूप में प्रतिस्थापित हो सके । ■

International Conference organised by WOSY at Bhubaneswar on

"The 21st Century Women's Issues Shaping the World"

WOSY has organised an international conference with the theme "The 21st Century Women's Issues Shaping the World". The conference was inaugurated by Prof.Ganeshi Lal ji, Hon'ble Governor of Odisha as the Chief Guest in the presence of Shri Sunil Ambekar ji, National Organising Secretary of Akhil BharatiyaVidyarthiParishad as the Guest of Honour.

His Excellency the Hon'ble Governor of Odisha Prof Ganeshi Lalji at his inaugural remark told us that daughters are not born they are a manifestation. Dr Rashmi Das, Chairperson, WOSY on her key note laid a launch pad of the conference highlighting the issues women are facing in the 21st Century and that are shaping the world as well as the aspirations for the conference. She said that we consider women's issues the preeminent social agenda of our times, something which has to be acted upon by the entire society. Women's issues are shaping government policy and they are shaping the world. Any society wishing to be fair and just must account for the way it treats women. Society has to be retrofitted to reflect truly the ability and aspirations of women.

Shri Ambekar highlighted the major flagship initiatives of Indian Government that aredesigned and promoted for the upliftment of women in India. Ujjwala scheme of providing LPG gas connection to rural women, toilets constructed for hygiene and safeguarding integrity of women, providing Atal pension Yojana, extending maternity leave to 6 months which are all aligned to the Government's motto of 'SabkaSathSabkaVikas'.

The two days deliberation was divided into 4 plenary sessions, 3 parallel sessions and 1 paper presentations from delegates. The two days deliberations saw and enriching and engaging sessions with each session been delivered by experts who have work extensively at their domain.

In first plenary Session titled 'Women at workplace', In conversation with Lucy Guest Vice-Chairman WOSY and Dr Rashmi Das Chairperson WOSY, Smt Hasina shared her experience and challenges she as a woman faced during her journey in setting up a voluntary organisation. As a young girl from North Eastern part of India she had to answer many questions from family, society and to Government. After 20 years of struggle she has created a highly social impact NGO.

Second plenary session was dedicated to 'Role of Indian Women in India's leadership of the World'. The session was an eye opening on how women have been playing a crucial role in strengthening economy from home to creating national assets. Smt. Karuna Gopal says women are blessed with talents for multi-tasking as it is said that a woman can juggle balls and walk on a tight rope. In Indian culture women are referred as symbol of power (shakti) and that power is depicted as a triangle, one angle of the triangle signifies knowledge (Jnana), second angle signifies desire (icha) and the third angle signifies action ((kriya) and that can be concluded as a woman can exhibit her power by accumulating knowledge and having an intrinsic desire to bring it into action. Professor vividly explains with facts and statistics that woman are the key to India's growth and had in fact been responsible for driving the growth in recent years. He says Indian economy is referred as feminine economy in contrast to American and European countries as the majority of the

households in India are run by women who have a tendency to save money. If we observe Hindu mythology the name of male Gods begins with Goddess which signifies the place of women as equal partners.

The third plenary session was design to highlight what men can and should do for women empowerment. Both speakers with their own experience and contributions made towards women empowerment made an exhilarating remark on how it is important to have a conducive dialogue between men and women for understanding and support. Shri Laxman stressed the inherent qualities of women such as softness, selfless service and their qualities to change mindset of male. He also spoke about the initiative of ABVP of empowering girls through its initiative of "Mission Sahasi" by training self-defence to lakhs of girls across India. Shri K.A Badarinath spoke on how women in India has always been held with high esteem as compared to western countries. During his speech he made a pertinent point on the need to change the male's attitude and approach towards women. Drawing inference from Hindu mythology he spoke about Ardhanareshwar a form of Lord Shiva where male (purusha) and female (prakruti) are worshipped as the symbol of balance between masculine and feminine. He also emphasised the need of giving equal opportunities and resource to girl child.

Last plenary session was on "Security & Sensitization of Women". Addressing to the participants, the inspiring lady shared both about her professional and private life and how she had been transferred 42 times in 18 years. She stressed that when you stay on the right side of the law you will always win in the end and sometimes it required standing up in the court system for the right thing even it involves financial cost. She further says feminity plus masculinity is the art to keep strong in the male dominated workplace. She says during her service in police force, women were judge by how they behaved as compared to their male counterpart such as showing feminine signs. Things are changing as women brings with them many things such as sympathy, empathy and emotional strength.

The conference concluded with the Valedictory session. The Chief Guest was Ambassador Mrs Banashri Bose Harrison of India to Sweden, Guest of Honour was Shri K N Raghunandan, National Joint Organising Secretary ABVP, also on stage were WOSY Chairperson, Dr Rashmi Das, Shri Sanjeev Ningombam, Secretary General of WOSY and Shri Ashish Chauhan, National General Secretary ABVP.

Shri Sanjeev presented the highlights of the conference and opined on how significant and impactful the conference is. Dr Rashmi Das ji left us with the overriding conclusion that EDUCATION IS THE GAMECHANGER and Girls has to rise and shine. Madam Ambassador who have served at 53 countries as foreign diplomat stressed the need of empowering women and understanding dreams and aspirations of a girl child. She says society can lead to a meaningful direction when women stands tall and at a right path. Shri Raghunandan on his guest of honour address remarked the importance of women in Indian Society. He took examples of "Ema Keithel" familiarly known as "Mother's Market", an exclusive market meant and run by women of Manipur.

Three parallel sessions were also organised on 'Indian Government for Women', 'Mothers, how to heal the World?' and 'Health & Psychology'. The new team (office bearers) of WOSY was announced by the Chairperson, Dr. Rashmi Das. Shri. Mobarak proposed the vote of thanks. ■

भारत गौरव यात्रा

अंतर-राज्य छात्र जीवन दर्शन

भारत तो 1947 में ही आजाद हो गया था लेकिन देश का पूर्वोत्तर क्षेत्र शेष भारत के साथ आत्मीय स्वभाव से नहीं जुड़ पाया। आजादी के 16 साल बाद आत्मीयता के साथ शेष भारत से जोड़ने की पहल 1966 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रकल्प अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (SEIL) के माध्यम से हुई। विविधता में एकता का मूल मंत्र लिये अभाविप के द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों के सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोगों के बीच एकात्मता, जागरूकता और स्वालंबन का भाव लिये 1966 से सील यात्रा शुरू की गई, जो अभी तक जारी है। इस यात्रा के तहत पूर्वोत्तर के प्रतिभागी शेष भारत के विभिन्न परिवारों में ठकरते हैं और उनके साथ रहकर वहां की भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक व आर्थिक परिस्थितियों से परिचित होते हैं। इसी प्रकार शेष भारत के प्रतिभागी पूर्वोत्तर में जाते हैं और वहां के परिवारों के साथ रूकते हैं और वहां की संस्कृति, वेश – भूषा, रहन – सहन इत्यादि से अवगत होते हैं।

वर्ष 2019 की भारत गौरव यात्रा पांच जनवरी को गुवाहाटी से परिचय वर्ग से साथ शुरू हुआ, जिसका पहला समूह गुवाहाटी से सीधे दिल्ली पहुंचा। छात्रों का दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर में जोरदार स्वागत हुआ। इन छात्रों ने दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय, हिंदू कॉलेज तथा कुलपति कार्यालय का भ्रमण किया। नॉर्थ कैंपस में आयोजित स्वागत कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह ने कहा कि पूर्वोत्तर से शेष भारत को सीखने के लिए ढ़ेर सारी चीजें हैं। सील पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने का महत्वपूर्ण कदम है। वहीं अभाविप की राष्ट्रीय छात्रा प्रमुख ममता यादव ने कहा कि पूर्वोत्तर भारत की विविधता से पूरे भारत को परिचित कराने में यह प्रकल्प बेहद महत्वपूर्ण है। मौके पर सील यात्रा की नेतृत्व कर रहीं मेघालय प्रांत की प्रांत मंत्री डार्लिन ने कहा कि यह यात्रा हम सभी को भारत के साथ परिचय कराने में कारगर सिद्ध होगी। यात्रा के दूसरे दिन छात्रों ने संसद भवन में लोकसभा की कार्यवाही देखी। इसके बाद केन्द्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात की। मुलाकात के पश्चात वे लोग इंडिया गेट देखने चले गये फिर वहीं से चंडीगढ़ के लिए प्रस्थान हो गये। चंडीगढ़ का भ्रमण करने के पश्चात देहरादून आदि होते हुए छात्रों

का जत्था ताजनगरी आगरा पहुंची। ताजनगरी में आने पर उनके चेहरे पर खुशी देखते ही बनती थी लेकिन वापसी का वक्त आया तो बेगानों से मिले बेहिसाब प्रेम और स्नेह से उनकी आंखे नम हो गई। आगरा से रवानगी के पूर्व अभाविप के अखिल भारतीय राज्य विश्वविद्यालय प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने सील प्रतिभागियों के साथ पत्रकार वार्ता

आंखो में आंसू, दिल में अमिट यादों की पोटली.....

किसी ने ठीक ही कहा कि 'दिल तो दिल है, दिल पर किसी का जोर नहीं चलता' – कुछ यूं ही पूर्वोत्तर के छात्रों के साथ हुआ, मेजबान परिवार से कब आत्मीय संबंध बन गये पता ही नहीं चला । पूर्वोत्तर के छात्र जब मेजबान परिवार से विदा ले रहे थे तो उसकी आंखों में आंसू और दिल में कभी न मिटने वाली अमिट यादों की पोटली थीं । सभी जिन परिवारों में रूके थे उनके सदस्यों से गले लगाकर रोये और स्नेह के इस अमिट भाव को आजीवन जीवित रखने का वादा कर विदा हो रहे थे । मेजबान परिवार भी बिलख – बिलख को रो रहे थे मानों की वह अपनी बेटी को विदा कर रहीं हो । यह आत्मीय मिलन बेहत भावुक करने वाला था । सील यात्रा में आई नागालैंड की शिकमों के. कोन्यक बताती हैं कि मेरे लिए सब कुछ नया अनुभव है । मैं पहली बार अपन राज्य से बाहर निकलीं हूं, नये परिवार में रहना मिल रहा है, जब मैं उस परिवार से विदा ले रही थी तो काफी भावुक हो गई थी । मुझे लग रहा था कि मैं अपने परिवार से सदा – सदा के लिए बिछड़ रही हूं । सौभाग्यशाली हूं कि अभाविप के माध्यम से मुझे दूसरा परिवार मिला एवं पूरा भारत जानने को मिला । मेघालय की मेरी क्वीन कहती हैं कि मेरे सभी मेजबान परिवार ने मुझे बहुत प्यार दिया जैसे उनकी खुद की बेटी हूं । मुझे इस यात्रा के माध्यम से देश में अपने घर के अलावा कई अन्य परिवार मिले । अरूणाचल प्रदेश की हीना नाबुम का अनुभव तो चौंकाने वाला था । उन्होंने कहा कि सील यात्रा के पहले वो कभी ट्रेन पर नहीं चढ़ी थी, सील की वजह से उसे न केवल ट्रेन पर चढ़ने का मौका मिला बल्कि देश की राजधानी दिल्ली में जाकर संसद भवन की कार्यवाही भी देखने को मिली । बात करते वक्त उसके चेहरे पर गजब का उत्साह था लग रहा था मानों उसने आसमान से तारे तोड़ लायें हों ।

की और बताया कि प्रकृति के अलौकिक सौंदर्य की धरोहर पूर्वोत्तर देश का अनमोल हिस्सा है । सील प्रकल्प सभी के बीच भावनात्मक संस्कृति एवं सभ्यताओं का आदान – प्रदान, अलग भाषा अलग वेश फिर भी एक देश के विचार की अनुभूति और पूर्वोत्तर में विकास का संकल्प लिया जाता है । परिषद् का प्रकल्प पिछले 60 वर्षों कार्य कर रहा है ।

सील प्रतिभागियों का दूसरा समूह गुवाहाटी से पटना पहुंचने पर फूल – माला पहनाकर स्वागत किया गया । साथ ही प्रतिभागियों के सम्मान में अभिनंदन समारोह भी रखा । बिहार भ्रमण के पश्चात प्रतिभागी मध्यभारत और महाराष्ट्र के कई हिस्सों में पहुंचे । महाराष्ट्र और मध्यभारत में भी इनके सम्मान में कई कार्यक्रम आयोजित किये गये थे । यात्रा के अंतिम पड़ाव के पूर्व सील प्रतिभागी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुख्यालय नागपुर पहुंचे और वहां पर रा. स्व.संघ के सर संचालक मोहनराव भागवत से मुलाकात की । जबकि सिक्किम और अंडमान – निकोबार को मिलाकर बनाया गया तीसरा समूह गुवाहाटी से कोलकाता होते हुए भुवनेश्वर पहुंचे वहां पर उनके सम्मान में अभिनंदन समारोह किया गया था । इसके बाद कन्याकुमारी के लिए प्रस्थान हो गये, कन्याकुमारी पहुंचकर प्रतिभागी काफी रोमाचिंत हो उठे, कुछ प्रतिभागियों की मानें तो उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह भारत के अंतिम छोर पर खड़ा है । कन्याकुमारी के बाद पुनः ये लोग कोलकाता पहुंचेगें । बता दें कि इस बार सील यात्रा की शुरूआत पांच जनवरी को गुवाहाटी से हुई थी, जहां इन सभी को तीन समूहों में बांटकर दक्षिण भारत, मध्य भारत और उत्तर भारत के हिस्सों में भेजा गया था । इस यात्रा में पूर्वोत्तर के 22 जनजाति से लगभग 90 छात्र – छात्राओं ने प्रतिभाग लिया था । ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

राष्ट्रीय पदाधिकारी : 2018 –19

पदनाम	नाम	केन्द्र
अध्यक्ष	डॉ. एस. सुबैय्या	चेन्नई, तमिलनाडु
महामंत्री	श्री आशीष चौहान	मुंबई, महाराष्ट्र
उपाध्यक्ष	डॉ. छगन पटेल	मेहसाना, गुजरात
	डॉ. उमा श्रीवास्तव	गोरखपुर, गोरक्ष
	डॉ. आनंद पालिवाल	उदयपुर, चितौड़
	डॉ. बसंत कुमार	मैसुर, कर्नाटक
	डॉ. रमन त्रिवेदी	पटना, बिहार
मंत्री	श्री नरेन्द्र सपम	इम्फाल, मणिपुर
	कु. निधि त्रिपाठी	जेएनयू, दिल्ली
	श्री अभिलाष पांडा	भुवनेश्वर, ओड़िशा
	श्री भूपेन्द्र नाग	काकेर, छत्तीसगढ़
	कु. हेमा ठाकुर	शिमला, हिमाचल प्रदेश
	श्री उदय इन्हाला	एचसीयू, हैदराबाद
	श्री श्याम राज	एर्नाकुलम, केरल
संगठन मंत्री	श्री सुनील आंबेकर	मुंबई, महाराष्ट्र
सह संगठन मंत्री	श्री के. एन. रघुनंदन	भोपाल, मध्य भारत
	श्री जी. लक्ष्मण	चेन्नई, तमिलनाडु
	श्री श्रीनिवास	दिल्ली
	श्री प्रफुल्ल आकांत	भोपाल, मध्यभारत
कोषाध्यक्ष	श्री गितेश सामंत	मुंबई, महाराष्ट्र
कार्यालय मंत्री	श्री नीरज चौधरकर	मुंबई, महाराष्ट्र
सचिवालय सचिव	श्री प्रवीण गायकवाड़	मुंबई, महाराष्ट्र

64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां

युवा पुरस्कार समारोह के दौरान मंचासीन भारत के उपराष्ट्रपति एम. वैंकेया नायडु, गुजरात के राज्यपाल ओ. पी. कोहली, उप मुख्यमंत्री नितिन पटेल, परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री व अन्य

पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, मचासीन गुजरात के राज्यपाल ओ. पी. कोहली, क्षेत्रीय संगठन मंत्री सुरेन्द्र नाईक व अन्य

मित्र राष्ट्र नेपाल के प्रतिनिधियों के साथ अभाविप पदाधिकारी

अधिवेशन के थिम सॉन्ग के धुन पर झूमते कार्यकर्ता

समापन समारोह को संबोधित करते अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री के. एन. रघुनंदन

अधिवेशन स्थल पर बना सेल्फी केन्द्र

RNI No.: DELBIL/2017/73636
Date of Posting: 10-11 January, 2019
Date of Publishing: 8 January, 2019

Postal Regd. No.: DL(C)-11/1409/2017-2019
Post Office: NDGPO, New Delhi

भारत गौरव यात्रा (SEIL) 2019